CHAPTER 49

SANSKRIT

Doctoral Theses

01. अनीता रानी
नारी उत्पीड़न : धर्मशास्त्र एवं आधुनिक भारतीय विधिशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में।
निर्देशिका : डॉ. पङ्कजा घई कौशिक
Th 24704

सारांश
(असत्यापित)

प्रथम अध्याय 'धर्मशास्त्र का सामान्य परिचय' के अन्तर्गत धर्मशास्त्र के मुख्य विषय-आचार, व्यवहार और प्रायश्चित्त का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय 'धर्मशास्त्र में नारियों की स्थिति' के अन्तर्गत धर्मशास्त्रों में माता, पत्नी, कन्या, पुत्रवधू, बहन, विधवा, सती, दासी, वेश्या व अन्य स्त्रियों की स्थिति के साथ-साथ उनके कर्तव्य, विवाह, संस्कार, शिक्षा व वैधानिक अधिकारों की चर्चा की गई है। तृतीय अध्याय 'धर्मशास्त्र में नारी उत्पीड़न के प्रकार' के अन्तर्गत धर्मशास्त्रों में प्रतिपादित स्त्री के प्रति व स्त्री के द्वारा किए गए विविध प्रकार के उत्पीड़नों को उपस्थापित किया गया है। यहाँ अपहरण, दूषण, व्याभिचार, छेड़खानी, मार-पीट, घरेलू हिंसा, वध व मानसिक प्रताड़ना आदि उत्पीड़नों को दण्डमूलक श्रेणी के अन्तर्गत व्याख्यायित किया गया है। तत्पश्चात् स्त्री के प्रति सम्पत्ति के आर्थिक सन्दर्भों से सम्बन्धित उत्पीड़नों को बतलाया गया है। इसके उपरान्त विवाह-सम्बन्धित उत्पीड़न के विषयों को उपस्थापित किया गया है। चतुर्थ अध्याय 'उत्पीड़न के कारण' के अन्तर्गत धर्मशास्त्रों में नारी के प्रति किए गए उत्पीड़नों के कारणों पर विचार किया गया है। इस अध्याय में नारी के प्रति होने वाले विविध उत्पीड़नों की पृष्ठभूमि में सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक व राजनैतिक कारणों का अन्वेषण किया गया है। पंचम अध्याय 'व्यवहार की प्रक्रिया' के अन्तर्गत धर्मशास्त्रों में प्रतिपादित नारियों के प्रति होने वाले उत्पीड़नों व अपराधों हेतु विविध दण्ड-विधानों को विश्लेषित किया गया है। इन दण्ड-विधानों को धर्मशास्त्रीय परम्परा के अनुरूप जातिगत-भेद, लिङ्ग-भेद व आयु-भेद के आधार पर व्याख्यायित करके, इन दण्डों की साम्प्रतिक प्रासङ्गिकता को प्रकाश में लाया गया है। तत्पश्चात्, अन्त में वर्तमान समस्याओं के धर्मशास्त्रीय समाधानों को खोजने का प्रयास किया गया है।

विषय सूची

1. धर्मशास्त्र का सामान्य परिचय 2. धर्मशास्त्र में नारियों की स्थिति 3. धर्मशास्त्र मे नारी उत्पीड़न के प्रकार 4. उत्पीड़न के कारण 5. व्यवहार की प्रक्रिया। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

02. अनुपम कुमारी
प्रमुख संस्कृत रूपकों में नारी पात्र (बीसवीं शताब्दी से अद्यावधि पर्यन्त)।
निर्देशिका : डॉ. सरस्वती
Th 24669

विषय सूची

1. भूमिका 2. आधुनिक संसकृत रूपकों का परिचय 3. आधुनिक संसकृत रूपकों में वर्णित नारी पात्रों का सामाजिक अध्ययन 4. आधुनिक संसकृत रूपकों में वर्णित नारी पात्रों का राजनीतिक अध्ययन 5. आधुनिक संसकृत रूपकों में वर्णित नारी पात्रों का सांस्कृतिक अध्ययन 6. आधुनिक संसकृत रूपकों में वर्णित नारी पात्रों का वैवाहिक जीवन एवं प्रथाएँ। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

03. आर्य (मनोज)
पाणिनीय स्वरशास्त्र पर कैयट, नागेश एवं हरदत्त की टीकाओं का समीक्षात्मक अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. ओमनाथ बिमली
Th 24671

सारांश
(असत्यापित)

पाणिनीय व्याकरण परम्परा में पतंजलिविरचित महाभाष्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है। कात्यायन के लगभग 200 वर्षों बाद पतंजलि ने अष्टाध्यायी पर महाभाष्य की रचना की। महाभाष्य की दुरूहता एवं भावगम्भीरता को समझने के लिए कैयट ने 'प्रदीप' नाम्नी टीका का प्रणयन किया। यह टीका महाभाष्य के गूढ़ रहस्यों का उद्घाटन, प्राचीन आचार्यों के मत-मतान्तरों का विवेचन तथा भाष्यस्थ कारिकाओं का स्पष्टीकरण करने की क्षमता के कारण महाभाष्य के अध्ययन की एक नवीन दृष्टि प्रदान करती है। एतदतिरिक्त कैयट के गूढ़स्थलों एवं प्रक्रियागत पक्षों को हृदयङ्गम करने हेतु नागेशकृत प्रदीपोद्द्योत का भी अविस्मरणीय योगदान है। यह टीका न केवल कैयटकृत प्रदीप के अवबोधनार्थ अपितु भाष्यभाव ज्ञानार्थ भी सर्वश्रेष्ठ है। एतदतिरिक्त काशिकावृत्ति पर रचित पदमंजरीटीका का भी पाणिनीय व्याकरण में महत्त्वपूर्ण योगदान है। यह टीका प्रायः काशिका की प्रतिपद सुन्दर, सरस एवं भावगम्य व्याख्या करती हुई चलती है। इसीलिए इसकी अन्वर्थसंज्ञा पदमंजरी है। पाठभेदों पर विचार करना इसका अपना एक अलग वैशिष्ट्य है। प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में टीकात्रय के आलोक में पाणिनीय स्वरशास्त्र का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है। प्रथम अध्याय में उदात्तादि संज्ञाविधायक

सूत्रों तथा परिभाषा सूत्रों का विस्तृत विवेचन है। जिनमें उदात्तादि का स्वरूप, उच्चारण प्रकार, अज्ग्रहणानुवृत्ति के विषय में विभिन्न आचार्यों के मन्तव्य, समाहार का स्वरूप, स्वरित में उदात्त एवं अनुदात्त का विभाग, एकश्रुति स्वरूप निर्धारण इत्यादि विषयों का विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में प्रातिपदिकस्वर, प्रत्ययस्वर, धातुस्वर, चित्स्वर, तद्धितस्वर, पित्स्वर आदि का विवेचन इसमें किया गया है। तृतीय अध्याय में सामान्यतया समासान्तोदात्त पूर्वपदप्रकृतिस्वर पूर्वपदाद्युदात्त, उत्तरपदान्तोदात्त, उत्तरपदप्रकृतिस्वर आदि विषयों का स्वर-प्रक्रिया की दृष्टि से अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में सर्वपदग्रहण का विमर्श, प्रसङ्गतः वाक्यलक्षण विषयक कैयटादि के मत, धावति पद विश्लेषण, प्रहासविषयक भाष्यादि विमर्श आदि विवेचित हैं। इस प्रकार टीकात्रय के आलोक में विभिन्न आचार्यों के राद्धान्तों का विमर्श प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में किया गया है।

विषय सूची

1. विषय-प्रवेश 2. स्वरविषयक सामान्य परिचय एवं प्रकीर्ण सूत्र 3. पदस्वर 4. समासस्वर 5. वाक्यस्वर। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

04. घोडके सोमशंकर
पाणिनीय व्याकरण की प्रातिशाख्यी पृष्ठभूमि (पारिभाषिक शब्दावली के परिप्रेक्ष्य में)।
निर्देशिका : डॉ. कान्ता भाटिया
Th 24670

सारांश
(असत्यापित)

शोधकार्य के निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि महर्षि पाणिनि ने संस्कृत भाषा का अतिसुसंयत और सुदृढ़ व्याकरण प्रस्तुत करने के लिए संक्षिप्तीकरण की एक महत्त्वपूर्ण एवं बहुमूल्य पद्धति अपनायी है। सूत्रशैली में उपनिबद्ध अष्टाध्यायी ग्रन्थ का लाघव ही एक विशिष्ट गुण है और इस लघुता में पारिभाषिक शब्दों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। यतो हि पारिभाषिक शब्द रूप अन्य शब्द से अनेक बातों को असंदिग्ध रूप से कहा जा सकता है। यह विशिष्ट गुण पारिभाषिक शब्दों में व्यापक रूप से विद्यमान है। यही कारण है कि सूत्रकार अपने ग्रन्थों में पारिभाषिक शब्दों का भरपूर प्रयोग करते हैं एवं पूर्वाचार्यों द्वारा व्यवहृत शैली तथा पद्धति का सर्वथा त्याग सहसा सम्भव नहीं हो पाता क्योंकि रचयिता स्वसिद्धान्तों के अभिव्यंजन हेतु लोकप्रिय शैली, पद्धति तथा पारिभाषिक शब्दों का एक सीमा तक प्रयोग करना भी उपयोगी समझते हैं। पाणिनीय व्याकरण ग्रन्थ भी उक्त तथ्य का अपवाद नहीं है। तात्पर्य यह है कि महर्षि पाणिनि ने भी जिन पूर्ववर्ती आचार्यों के भाषा में प्रचलित अनेक

पारिभाषिक शब्दों को यथावत् अथवा किंचित् परिवर्तन के साथ अष्टाध्यायी में ग्रहण किया है; उनमें सर्वाधिक योगदान प्रातिशाख्य ग्रन्थों का रहा है, प्रातिशाख्य ग्रन्थों में प्रयुक्त अनेक पारिभाषिक संज्ञाएँ ऐसी भी हैं जो पाणिनीय व्याकरण में यथावत् प्रयुक्त होते हुए भी अर्थ की दृष्टि से पूर्णरूपेण एक दूसरे के समान नहीं है और सर्वथा भिन्न भी नहीं है। इसका कारण यह हो सकता है कि पाणिनीय व्याकरण किसी एक वेद अथवा वेद की किसी एक शाखा से सम्बद्ध सिद्धान्तों का नियमन नहीं करता अपितु चारों वेदों और उनसे सम्बद्ध शाखाओं में प्राप्त सामान्य सिद्धान्तों का प्रणयन करता है। अतः पाणिनीय व्याकरण में प्रयुक्त संज्ञाएँ व्यापक एवं सर्वग्राह्य हैं।

विषय सूची

1. वर्णसम्बन्धी पारिभाषिक शब्दावली 2. पदसम्बन्धी पारिभाषिक शब्दावली 3. स्वरसम्बन्धी पारिभाषिक शब्दावली 4. सन्धिसम्बन्धी पारिभाषिक शब्दावली 5. प्रकीर्ण- पारिभाषिक शब्दावली। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची। परिशिष्ट।

05. जया प्रियम्
विज्ञानभिक्षु की वेदान्त मीमांसा : विज्ञानामृतभाष के परिप्रेक्ष्य में ।
निर्देशक : प्रो. (डॉ.) रमेश चन्द्र भारद्वाज
Th 24696

सारांश
(असत्यापित)

विज्ञानभिक्षु ने सर्वप्रथम पूर्वपक्ष के रूप में शंकर को रखते हुए उनके द्वारा पोषित मत का खण्डन और भेदाभेदसिद्धान्त को पुष्ट किया। भेदाभेदसिद्धान्त भिक्षु की नवीन स्थापना नहींहै अपितु यह श्रुति से सम्मत है जिसके केवल पोषक भिक्षु है। उनका कहना है कि शंकर का सिद्धान्त केवल ब्रह्म ही सत्य है और जगत् स्वप्न की तरह मिथ्या है; यह मत श्रुतिसम्मत नहीं है। जिस प्रकार ब्रह्मसूत्र विज्ञानामृतभाष्य में ब्रह्म, आत्मा, जगत् इत्यादि के विषय में विस्तार से उल्लेख प्राप्त होता है उसी प्रकार भिक्षु का सांख्य-योग में प्रतिपादित जीव, प्रकृति, पुरुष इत्यादि के विषय में विस्तार से मत प्राप्त होता है | विज्ञानभिक्षु शंकर के ब्रह्म ही सत्य है अन्य नहींइस मत से सहमत नहीं है उनका कहना है कि जैसे ब्रह्म सत्य है वैसे ही जीव और जगत् जो कि उसी ब्रह्म के अंश है अत: वे भी सत्य है। जगत् एक स्वप्नमात्र नहीं है अपितु उसी ब्रह्म का अंश है अत: यह जगत् ब्रह्म से अभिन्न है । आत्मा ब्रह्म का ही अंशमात्र है इसकी पुष्टि के लिए भेदाभेदसिद्धान्त का सहारा लेते है । आत्मायें ब्रह्म का अंश उसी प्रकार होती हैं

जैसे अग्नि से स्फुलिंग निकलते हैं लेकिन वें स्फुलिंग अग्नि से पृथक् नहीं होतें वैसे ही आत्मायें भी ब्रह्म से पृथक् नहीं है इस प्रकार भेद होते हुए भी अभेद है । भिक्षु के अनुसार जगत् एक स्वप्नवत् मिथ्या नहीं है अपितु उसका भी अपना सत्य अस्तित्व है। यह जगत् ब्रह्म का ही अंश है अतः ब्रह्म से अभिन्न भी है । भिक्षु का भेदाभेदसिद्धान्त जगत् की सत्ता को भी सत्य सिद्ध करता है । भिक्षु ज्ञानकर्मसमुच्चयवाद के मानने वाले है जिसमें ज्ञान और कर्म दोनों का ही आश्रय लिया जाता है, जिसमें साधक की अपेक्षा से कभी ज्ञान की प्रधानता हो सकती है तो कभी कर्म की लेकिन केवल ज्ञान अथवा केवल कर्म की प्रधानता नहीं हो सकती ।

विषय सूची

1. भूमिका 2. अद्वैत, भेदाभेद वेदान्त ओर विज्ञानभिक्षु सम्मत अविभागाद्वैत 3. विज्ञानभिक्षु सम्मत साङ्ख्य-योग सिद्धान्त 4. ब्रह्मतत्त्व 5. परुष (आत्मा) 6. जगत् और उसका स्वरूप 7. बन्धन एवं मोक्ष। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

06. जैन (खुशबु कुमारी)
नरेन्द्रसेनाचार्य कृत सिद्धान्तसारसङ्ग्रह का समीक्षात्मक अध्ययन।
निर्देशिका : डॉ. दीपक कालिया
Th 24682

सारांश
(असत्यापित)

भूमिका के प्रथम अध्याय में सम्यग्दर्शन की परिभाषा, उसके भेद-प्रभेद, सम्यग्दर्शन के गुण, सम्यग्दर्शन को मलिन करने वाले दोष, सम्यग्दर्शन एवं सम्यग्ज्ञान में सम्बन्ध, सम्यग्दर्शन के वैशिष्ट्य का निरूपण है। द्वितीय अध्याय में सम्यग्ज्ञान का लक्षण, उसके भेद-प्रभेद, प्रत्यक्ष एवं परोक्ष ज्ञान, मत्यादि पाँचों ज्ञानों का विषय, अज्ञान इत्यादि विषय हैं। तृतीय अध्याय में व्रत निरूपण, व्रती का स्वरूप, आराधना, अनुप्रेक्षा, भावना, मरण इत्यादि का है। चतुर्थ अध्याय में जीव का लक्षण एवं स्वरूप, जीवों के भेद-प्रभेद इन्द्रियाँ, मार्गणा, गुणस्थान, जीवों की विभिन्न योनियाँ, लेश्या इत्यादि का विवेचन किया गया है। अजीव तत्त्व का सामान्य परिचय, अजीव का लक्षण, अजीव के धर्मादि पाँच भेद, उनके लक्षण, द्रव्य, अस्तिकाय-अनस्तिकाय, पृथिव्यादि में पुद्गलत्व सिद्धि, धर्मादि तत्त्वों का परस्पर उपकार, शब्द की पुद्गलत्व सिद्धि, शब्द के भेद इत्यादि को समाविष्ट है। आस्रव का लक्षण एवं उसका स्वरूप, आस्रव के भेद, कर्मप्रकृतियों के आस्रव-द्वार इत्यादि का विस्तृत विवरण दिया है। बन्ध के पाँच कारणों, आत्मा का कर्मबन्ध, कषाय कर्मबन्ध में हेतु कैसे? बन्ध के भेदों का विवरण है।

'संवरतत्त्व' प्रकरण में 'संवर' की परिभाषा एवं उसके भेद तथा हेतुओं का नाममात्र दिया है किन्तु विषय के स्पष्टीकरण हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में संवर के सत्तावन हेतुओं का उल्लेख किया गया है। 'निर्जरातत्त्व' प्रकरण में निर्जरा की परिभाषा, उसके भेद, निर्जरा के हेतु तप के आभ्यन्तर एवं बाह्य भेदों का विस्तृत विवेचन किया गया है। 'मोक्ष' प्रकरण में मोक्ष की परिभाषा, सिद्धपरमेष्ठि के स्वरूपादि का विवरण दिया गया है। पंचम अध्याय में अधोलोक, मध्यलोक एवं ऊर्ध्व लोक के भौतिक स्वरूप वर्णन है। षष्ठ अध्याय में निम्न सिद्धान्तों का खण्डन में किया है-चार्वाकों द्वारा मान्य अनात्मवाद, वेदों के अपौरुषेय, नैयायिक एवं वैशेषिक सम्मत ईश्वर सृष्टि कर्तृत्व, ईश्वर सर्वज्ञत्व, आत्म नित्यत्व, विभू परिमाण, कर्ता, मूर्तिक, अमूर्तिक केवली कवलाहार एवं स्त्री-मुक्ति उपसंहार में सभी अध्यायों का सार दिया है।

विषय सूची

1. सिद्धान्तसारसङ्ग्रह में साम्यग्दर्शन की अवधारणा 2. सिद्धान्तसारसङ्ग्रह में साम्यग्ज्ञान की अवधारणा 3. सिद्धान्तसारसङ्ग्रह में सम्यक्चारित्र की अवधारणा 4. सिद्धान्तसारसङ्ग्रह में प्रवर्तित जैन तत्त्वमीमांसा 5. लोक सवरूप 6 परमत निरसन। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

07. जोशी (उमेश चन्द्र)
शृंगार-प्राकश में उपलब्ध दार्शनिक सामग्री की समीक्षा (मीमांसा तथा न्याय दश्नन के विशेष सन्दर्भ में)।
निर्देशक : डॉ. रंजन कुमार त्रिपाठी
Th 24702

सारांश
(असत्यापित)

काव्यशास्त्र के उपकारक तत्त्वों में दर्शनशास्त्र का अपना एक विशिष्ट महत्त्व है, यही कारण है कि कुछ काव्यशास्त्री आचार्यों ने अपने ग्रन्थों में काव्यशास्त्रीय विषयों की स्थापना के लिए दार्शनिक विषयों का भी प्रतिपादन किया है।काव्यशास्त्री आचार्य भोज ने काव्यशास्त्र-विषयक दो ग्रन्थों "सरस्वतीकण्ठाभरण" और "शृंगारप्रकाश" की रचना की । शृंगारप्रकाश में यद्यपि भोजराज का परम लक्ष्य शृंगार-रस की स्थापना करना रहा है, तथापि उन्होंने शृंगारप्रकाश के विभिन्न स्थलों पर सांख्य-योग व्याकरण, मीमांसा, न्याय तथा वैशेषिक दर्शनों से सम्बन्धित सामग्री का भी प्रतिपादन किया है। यह शोधकार्य शृंगार-प्रकाश की दार्शनिक विषय वस्तु को आधार बनाकर किया गया है, जिसका शीर्षक "शृंगार-प्रकाश में उपलब्ध दार्शनिक सामग्री की समीक्षा (मीमांसा तथा न्याय दर्शन के विशेष सन्दर्भ में)" है। यह शोध-प्रबन्ध भूमिका सहित पांच अध्यायों में उपनिबद्ध हैं, जिसके भूमिका भाग में भोज का व्यक्तित्व और कर्तृत्व नामक शीर्षक के अन्तर्गत भोज की वंश-परम्परा, उनका समय, जन्म-स्थान, भोज की ग्रन्थ-सम्पदा, उनकी साहित्यशास्त्रीय कृत्तियां, तथा शृंगार- प्रकाश ग्रन्थ के 36 प्रकाशों का प्रतिपाद्य विषय

प्रतिपादित किया गया है। इसके प्रथम अध्याय में शृंगार-प्रकाश में उपलब्ध प्रमुख भारतीय दर्शनों से सम्बद्ध सामग्री का संक्षिप्त विवरण दिया गया है। द्वितीय अध्याय में शृंगार-प्रकाश में उपलब्ध मीमांसा दर्शन से सम्बन्धित सामग्री की समीक्षा की गयी है। तृतीय अध्याय में शृंगार-प्रकाश में उपलब्ध न्याय दर्शन तथा प्रमाणों से सम्बन्धित सामग्री की समीक्षा की गयी है। शोध-प्रबन्ध के चतुर्थ अध्याय में शृंगार-प्रकाश में उल्लिखित विभिन्न दार्शनिक आचार्यों के मतों की समीक्षा की गयी है, तथा पञ्चम अध्याय में भोज के उत्तरवर्ती काव्यशास्त्रियों पर उनके दार्शनिक चिन्तन का प्रभाव यह शीर्षक निरूपित किया गया है। अन्त में काव्यशास्त्री भोज का दर्शनिक अवदान नामक शीर्षक से विषय का उपसंहार किया गया है।

विषय सूची

1. भूमिका : भोज का व्यक्तित्व और कर्तृत्व 2. शृंगारप्रकाश में उपलब्ध प्रमुख भारतीय दर्शनों से सम्बद्ध-सामग्री का संक्षिप्त विवरण 3. शृंगारप्रकाश में उपलब्ध मीमांसा-दर्शन से सम्बन्धित सामग्री की समीक्षा 4. शृंगारप्रकाश में उपलब्ध न्याय-दर्शन एवं प्रमाणों से सम्बन्धित सामग्री की समीक्षा 5. शृंगारप्रकाश में उपलब्ध विभिन्न दार्शनिक आचार्यों के मतों की समीक्षा 6. भोज के उत्तरवर्ती काव्यशास्त्रियों पर उनके दार्शनिक चिन्तन का प्रभाव। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

08. ठाकुर (त्रिपुरारि कुमार)
प्रौढदेवरायकृत ब्रह्मसूत्रवृत्ति का समीक्षात्मक अध्ययन।
निर्देशिका : डॉ. पङ्कज कुमार मिश्र
Th 24693

विषय सूची

1. कृतिकर्त्तृत्वविषयक मीमांसा 2. सांख्यसम्मत मत-प्रतिमत 3. ब्रह्मसूत्रवृत्ति में परमत सम्बद्ध मत-प्रतिमत 4. ब्रह्मसूत्रवृत्ति में वर्णित जीवात्मका-विमर्श 5. वृत्तिसम्मत मोक्ष-विमर्श। प्रबन्ध-निष्कर्ष। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

09. त्रिपाठी (अखिलेश कुमार)
आधुनिक संस्कृत-काव्यशास्त्र में शब्दशक्ति-विमर्श।
निर्देशिका : डॉ. मैत्रेयी कुमारी
Th 24680

सारांश
(असत्यापित)

आधुनिक संस्कृत काव्यशास्त्र में अन्यान्य विषयों के साथ शब्दशक्ति विषयक अवधारणा पर पर्याप्त चिन्तन हुआ है । अनेक आचार्यों ने अपने मौलिक लक्षणों युक्तियों एवं दृष्टांतों के द्वारा इस विषय पर अनेकानेक नवीन आयाम उद्घाटित किए हैं। प्रस्तुत शोध प्रबंध

'आधुनिक संस्कृत काव्यशास्त्र में शब्दशक्ति विमर्श ' को चार अध्यायों में विभाजित किया गया है जो निम्नवत है- पूर्वपीठिका प्रथम अध्याय - संस्कृत काव्यशास्त्र में शब्दशक्ति चिन्तन की परम्परा द्वितीय अध्याय -आधुनिक काव्यशास्त्रियों का शब्दार्थ चिन्तन तृतीय अध्याय - आधुनिक शब्दशक्ति चिन्तन में परम्परानुपोषण चतुर्थ अध्याय -आधुनिक शब्दशक्ति चिन्तन में परम्पराननुपोषण अथवा शब्दशक्त्यभाववाद उपसंहार सन्दर्भग्रन्थ-सूची प्रस्तुत शोध प्रबंध में आधुनिक संस्कृत काव्यशास्त्र के एक अत्यंत महत्वपूर्ण विवेच्य विषय शब्दशक्ति विमर्श के साङ्गोपाङ्ग एवं समालोचनात्मक अनुशीलन का प्रयास किया गया है।

विषय सूची

1. संस्कृत काव्यशास्त्र में शब्दशक्ति चिन्तन की परम्परा 2. आधुनिक काव्यशास्त्रियों का शब्दार्थ चिन्तन 3. आधुनिक शब्दशक्ति चिन्तन में परम्परानुपोषण 4. आधुनिक शब्दशक्ति चिन्तन में परम्पराननुपोषण अथवा शब्दशक्त्यभाववाद। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

10. ताहिर अली

सिर्रे अकबर का समीक्षात्मक अध्ययन : प्रमुख दस उपनिषदों के सन्दर्भ में।

निर्देशक : डॉ. दया शंकर तिवारी एवं प्रो. राजिन्दर कुमार

Th 24673

सारांश

(असत्यापित)

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में पाँच अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में उपनिषदों का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी महत्ता पर विचार किया गया है। दूसरे अध्याय के अन्तर्गत दाराशिकोह के जीवन-परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विषय में विस्तारपूर्वक बताया गया है। इसमें दाराशिकोह का काल, जन्मस्थान एवं वंश, शिक्षा-दीक्षा, व्यक्तित्व एवं पाण्डित्य आदि पर विचार किया गया है। तृतीय अध्याय 'सिर्रे अकबर' के अनुवादों के सर्वेक्षण से सम्बन्धित है। इसके अन्तर्गत विविध भाषाओं में प्राप्त 'सिर्रे अकबर' के अनुवादों का संक्षिप्त सर्वेक्षण प्रस्तुत किया गया है। चतुर्थ अध्याय में 'सिर्रे अकबर' की समीक्षा की गई है, जिसके अन्तर्गत मूल संस्कृत उपनिषदों के साथ 'सिर्रे अकबर' का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में औपनिषदिक धर्म-दर्शन के प्रसार में दाराशिकोह के योगदान का वर्णन किया गया है; जिसके अन्तर्गत इनकी संस्कृत वाङ्मय से सम्बद्ध कृतियों की विवेचना की गयी है, जिनके माध्यम से गैर-संस्कृतभाषी लोगों को भी भारतीय धर्म और दर्शन को समझने एवं जानने का अवसर प्राप्त हुआ। शोध-प्रबन्ध के अंत में उपसंहार प्रस्तुत करते हुए समाज को धर्मसमन्वय एवं धार्मिक सहिष्णुता का सन्देश देने का प्रयास किया गया है।

विषय सूची

1. उपनिषद् : एक संक्षिप्त परिचय 2. दाराशिकोह का जीवन-परिचय, व्यक्तितव एवं कृतित्व 3. सिर्रे अकबर के अनुवादों का सर्वेक्षण 4. दाराशिकोहकृत सिर्रे अकबर एवं मूल उपनिषदों का तुलनात्मक अध्ययन 5. औपनिषदिक धर्म-दर्शन के प्रसार में दाराशिकोह का योगदान। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

11. दीप (अरुण कुमार)
हैमव्याकरण को आचार्य विनयविजय गणि का अवदान (समास एवं तद्धित प्रकरणों के विशेष सन्दर्भ में)।
निर्देशिका : डॉ. ए. सुधा देवी
Th 24697

सारांश
(असत्यापित)

संस्कृत-व्याकरण ग्रन्थों की परम्परा का सर्वेक्षण करने पर विदित होता है कि 5वीं शताब्दी से लेकर 20वीं शताब्दी ई. तक निर्बाध रूप से जैन-व्याकरण ग्रन्थों की रचना होती रही है। सभी संस्कृत तथा जैन व्याकरण ग्रन्थों की तुलनात्मक अध्ययन से ज्ञात होता है प्रायः सभी जैन-वैयाकरण किसी न किसी रूप में पाणिनि से प्रभावित रहे हैं। इसी शृंखला में आचार्य हेमचन्द्र द्वारा रचित 'सिद्धहैमशब्दानुशासन' पर अष्टाध्यायी का पर्याप्त प्रभाव दृष्टिगोचर होता है प्रायः कई सूत्रों में साम्यता भी दिखाई पड़ती है। प्रकृत शोध-प्रबन्ध में दोनों आचार्यों विनयविजय गणि एवं हेमचन्द्र द्वारा रचित स्वोपज्ञवृत्तियों को आधार बनाकर उनमें तुलनात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए समास तथा तद्धित प्रत्यय में जो कुछ भी साम्य तथा भिन्नता को प्रदर्शित करने का प्रयास किया है। आचार्य विनयविजय गणि प्रायः आचार्य हेमचन्द्र द्वारा प्राप्त अर्थ को ही स्वीकार अल्पशः स्थल ही प्राप्त होते हैं जहाँ विनयविजय ने कुछ विशेष कहा हों। तथापि किसी भी टीका या वृत्ति लेखन का उद्देश्य होता है लिखित आधार ग्रन्थ का सरलीकरण करना हैं जिसमें हैमप्रकाशकार सफल होते हैं। जहाँ हेम ने अलग-अलग सूत्रों की अलग-अलग व्याख्या की है। हैमप्रकाशकार ने एक ही सूत्र के अन्तर्गत पाठकों की सुगमता के लिए कई सूत्रों का संक्षिप्त व्याख्यान किया है। जैन धर्म के किसी एक विशेष सम्प्रदाय से सम्बद्ध होने के कारण उक्त ग्रन्थ अपने समय में तो पर्याप्त लोकप्रिय रहे किन्तु अष्टाध्यायी के समान सार्वभौमिक ख्याति प्राप्त न कर सके तथा संस्कृत के विद्वानों में अष्टाध्यायी के प्रति आदर की भावना बनी रही संस्कृत व्याकरण ग्रन्थों में अष्टाध्यायी का ही

प्रभुत्व रहा। संस्कृत-व्याकरण-ग्रन्थों के अध्ययन की दृष्टि से जैन व्याकरण ग्रन्थों के प्रति उदासीनता के निवारण में प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध सहायक होगा।

विषय सूची

1. संस्कृत एवंज ैन व्याकरण साहित्य का उद्भव एवं विकास 2. समास विषयक अवदान 3.तद्धित प्रकरण विषयक अवदान। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

12. दूबे (विकास)
भासकृत महाभारतमूलक रूपकों की ध्वनिशास्त्रीय समालोचना।
निर्देशक : डॉ. रंजन कुमार त्रिपाठी
Th 24686

सारांश
(असत्यापित)

संस्कृत काव्यशास्त्र में छः सम्प्रदाय विवेचित हैं। जिसमें ध्वनि सम्प्रदाय एक प्रमुख सम्पद्राय है। "भासकृत महाभारतमूलक रूपकों की ध्वनिशास्त्रीय समालोचना" प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध का विषय है। महाकवि भास के महाभारतमूलक रूपकों में ध्वनि-तत्त्व सरलता एवं सहजता से प्राप्त हुए है। यद्यपि कालक्रमानुसार महाकवि भास के पश्चात् इस ध्वनि सम्प्रदाय का आविर्भाव हुआ तथापि इनकी कृतियों में ध्वनि के प्रायः सभी भेदोपभेद दृष्टिगोचर हुए हैं। इन तत्त्वों के अन्वेषण में कवि के भावों एवं विचारों को पूर्णतया ध्यान में रखा गया है क्योंकि इनकी शैली प्रभावोत्पादक एवं भाषा सरलतया बोधगम्य है। यह शोध-प्रबन्ध विषय-प्रवेश सहित पाँच अध्यायों में विभक्त है। विषय-प्रवेश में महाकवि भास के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व का विवेचन किया गया है तथा उनकी नाट्यकृतियों का वर्गीकरण करते हुए उनपर हुए शोधकार्यों पर प्रकाश डाला गया है। तदुपरान्त प्रथम अध्याय में वस्तुध्वनि के सभी भेद-प्रभेदों का परिचय देकर उनको महाकवि भास के रूपकों में अन्वेषित करके दर्शाया गया है। द्वितीय अध्याय में अलङ्काररूप संलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्यध्वनि को परिभाषित करके उसके भेद-प्रभेद यथा-शब्दशक्तिमूल अलङ्कारध्वनि व अर्थशक्तिमूल अलङ्कारध्वनि का परिचय देकर उनकी स्थिति को दर्शाने का प्रयास किया गया है। तृतीय अध्याय में सर्वप्रथम रस सम्प्रदाय का परिचय देकर रसादि ध्वनि में उनकी परिणति का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में गुणीभूतव्यङ्गय के अष्टविध भेदों की गवेषणा कर उनकी स्थिति को बताने का प्रयास किया गया है। पञ्चम अध्याय में चित्रकाव्य का अर्थ एवं स्वरूप बताते हुए उसके दो भेदों - शब्दचित्र एवं अर्थचित्र का सुष्ठु निरूपण किया गया है। अन्ततः उपसंहार करते हुए प्रकृत शोध-प्रबन्ध की इतिश्री की गयी है। अस्तु इनके रूपकों में ध्वनि-तत्त्व के अन्वेषणोपरान्त यह विदित होता

है कि इनकी कृतियों में इनकी नैसर्गिक प्रतिभा एवं उत्कृष्ट नाट्यकला का दिग्दर्शन हुआ है। इन सभी विशेषताओं के कारण ही महाकवि भास के सभी रूपक ध्वनि सिद्धान्त के निकष पर पूर्णतया सफल सिद्ध होते हैं।

विषय सूची

1. विषय-प्रवेश 2. भासकृत रूपकों में वस्तुरूप संलक्ष्यक्रमव्यङ्गयध्वनि 3 भासकृत रूपकों में अलङ्काररूप संलक्ष्यक्रमव्यङ्गयध्वनि 4 भासकृत रूपकों में रसादिरूप असंलक्ष्यक्रमव्यङ्गयध्वनि 5. भासकृत रूपकों में गुणीभूतव्यङ्गय 6. भासकृत रूपकों में चित्रकाव्य। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

13. धर्मपाल

सरस्वतीकण्ठाभरण के प्रकृत्यधिकार एवं अष्टाध्यायी के अङ्गाधिकार का तुलनात्मक अध्ययन।

निर्देशिका : डॉ. कान्ता भाटिया

Th 24698

सारांश

(असत्यापित)

पाणिनीय व्याकरण के आधारभूत ग्रन्थ अष्टाध्यायी के अङ्गाधिकार प्रकरण जिसके अन्तर्गत विभिन्न धातु सम्बन्धी कार्य, प्रातिपदिक सम्बन्धी कार्य, इट्-अनिट् विधायक कार्य, गुण-वृद्धि विधायक कार्य, नुमागमादि विधान कार्य, विभक्ति सम्बन्धी कार्य, आर्धधातुक विषयक कार्य, भसंज्ञक कार्य, गुण-वृद्धि प्रतिषेध कार्य अभ्यास आदि कार्यों का वर्णन है। यह अष्टाध्यायी का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य-विधान प्रकरण है। 11वीं शताब्दी में भोजदेव विरचित सरस्वतीकण्ठाभरण की प्रकृति संज्ञा तथा प्रकृत्यधिकार प्रकरण जिसमें धातु सम्बन्धी, प्रातिपदिकसम्बन्धी, गुण-वृद्धि विधायक, गुण-वृद्धि प्रतिषेध परक, इट्-अनिट् नियामक, अभ्यास विधायक, विभक्ति विधायक आदि विभिन्न कार्यों का वर्णन है। दोनों आचार्यों के द्वारा विभिन्न कालक्रम में उल्लिखित समान विषयक दोनों ग्रन्थों के क्रमशः 'अङ्गाधिकार प्रकरण तथा प्रकृत्यधिकार प्रकरण' का तुलनात्मक अध्ययन इस शोध-प्रबन्ध में किया गया है। उक्त दोनों ग्रन्थ समान विषयक तथा समान प्रकरणात्मक हैं। विभिन्न कालक्रम में विभिन्न लेखकों द्वारा लिखित होने से दोनों में वैषम्य और समान विषयता के कारण साम्य होना स्वाभाविक ही है। दोनों का उद्देश्य यदि एक ही है तो वैभिन्य का कारण पद्धति की भिन्नता अथवा सिद्धान्त की भिन्नता है यह विचारणीय है? इसी विचार से प्रेरित होकर यह शोधकार्य किया गया है। पाणिनीय व्याकरण अनेक व्याख्याओं, वृत्तियों और टीकाओं से समृद्ध है, जबकि सरस्वतीकण्ठाभरण अद्यावधि समग्र रूप में प्रकाशित नहीं है। इसका सप्तमाध्याय इस समय तक हस्तलेखमय है और अष्टमाध्याय की हृदयहारिणी टीका भी अभी अप्राप्त है। इस ग्रन्थ के अनेक सूत्रों पर मध्य-मध्य में टीका अनुपलब्ध है। यद्यपि मेरा यह

शोध-प्रबन्ध सरस्वतीकण्ठाभरण के प्रकृत्यधिकार प्रकरण तथा अष्टाध्यायी के अड्गाधिकार प्रकरण पर तुलनात्मक रूप से किया गया इदम् प्रथम व मौलिक है तथापि यह निम्नलिखित शोध संभावनाओं के द्वार खोलता है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध प्रबन्ध सरस्वतीकण्ठाभरण की विशेषता, महत्ता और उपादेयता का परिज्ञान कराने में अवश्य समर्थ होगा।

विषय सूची

1. भोजदेव एवं पाणिनि 2. सरस्वतीकण्ठाभरण एवं अष्टाध्यायी 3. प्रकृत्यधिकार एवं अड्गाधिकार(स्वरूप एवं संरचना) 4. प्रकृत्यधिकार एवं अड्गाधिकार विहित प्रातिपादिक सम्बन्धी कार्य 5. प्रकृत्यधिकार एवं अड्गाधिकार विहित धातु सम्बन्धी कार्य 6. प्रकृत्यधिकार एवं अड्गाधिकार विहित इट्-अनिट सम्बन्धी एवं प्रकीर्ण कार्य 7. सरस्वतीकण्ठाभरण के प्रकृत्यधिकार एवं अष्टाध्यायी के अड्गाधिकार का समीक्षात्मक मूल्याङ्कन। उपसंहार। परिशिष्ट। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

14. पवन कुमार
न्यायसार : एक अवलोकन।
निर्देशक : डॉ. पंकज कुमार मिश्र
Th 24688

सारांश
(असत्यापित)

शोध विषय के अनुसार शोध प्रबन्ध भूमिका भाग के अतिरिक्त चार अध्यायों में विभक्त है। प्रत्येक अध्याय के अन्त में अध्याय का सार प्रस्तुत किया गया है। भासर्वज्ञ ने प्रमाण लक्षण निरूपण में न्यायदर्शन में सामान्यतः स्वीकृत प्रमाण लक्षण के स्थान पर एक नवीन एवं परिष्कृत लक्षण 'सम्यगनुभवसाधानं प्रमाणम्' प्रस्तुत किया है। आलोच्य टीकाकार भासर्वज्ञोक्त लक्षण का ही समर्थन करते हुए लक्षणस्थ पदों के प्रयोजन को स्पष्ट करते हैं। 'प्रत्यक्षलक्षण-तत्र सम्यगपरोक्षानुभव साधनं प्रत्यक्षम्' न्याय की परम्परा में एक सर्वथा नवीन लक्षण है। टीकाकार भासर्वज्ञोक्त लक्षण का अनुमोदन करते हैं। भासर्वज्ञ ने अनुमान का सम्यगविनाभावेन परोक्षानुभव साधनमनुमानम् लक्षण प्रस्तुत किया है। टीकाकरों ने लक्षण की समुचित विवेचना प्रस्तुत की है भासर्वज्ञ ने हेत्वाभास विवेचन में छः हेत्वाभास स्वीकार किये हैं। प्रमाण चतुष्टय के स्थान पर प्रमाण त्रयवाद का समर्थन करते हैं। भासर्वज्ञोक्त 'आगमलक्षण-समयबलेन सम्यक् परोक्षानुभव साधनमागमः' एक नवीन एवं परिष्कृत लक्षण हैं। भासर्वज्ञ द्वारा प्रमेय का चतुर्धा विभाजन भी न्यायदर्शन की परम्परा में महत्त्वपूर्ण है। भासर्वज्ञ द्वारा किये गये ईश्वर विषयक चिन्तन में टीकाकारों ने अनेक आगम प्रमाण प्रस्तुत कर भासर्वज्ञ के ईश्वर विषयक विचारों का समर्थन किया है। आत्मा के ज्ञान के विषय में भासर्वज्ञ ने आत्मा के अनुमान गम्य होने का प्रतिपादन किया है। किन्तु टीकाकार आत्मा के

प्रत्यक्ष ज्ञान का भी समर्थन करते हैं। भासर्वज्ञ ने न्यायदर्शन की अवधारणा - सुख दुःख विहीन मोक्ष के स्थान पर सुखसद्भाव रूप मोक्ष का समर्थन किया है। नित्यसंवेद्यमानेन सुखेन विशिष्टात्यन्तिकी दुःखनिवृत्तिः पुरुषस्य मोक्ष इति। संक्षेपतः कहा जा सकता है कि यद्यपि भासर्वज्ञ ने न्यायदर्शन के सिद्धान्तों को नवीन रूप में व्याख्यायित किया है तथापि सूत्रकार से विरोध स्वीकार नहीं है। जिस प्रकार न्यायदर्शन को नवीन रूप में जानने के लिए भासर्वज्ञ का महत्त्वपूर्ण अवदान है उसी प्रकार भासर्वज्ञ के सम्पूर्ण और सम्यक्तया अध्ययन के लिए टीकाओं का अध्ययन अपरिहार्य है।

विषय सूची

1. प्रमाणलक्षण विवेचन 2. प्रत्यक्षप्रमाण विवेचन 3. अनुमानप्रमाण विवेचन 4. आगम प्रमाण विवेचन। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

15. पाण्डेय (प्रीति)
मीमांसार्थप्रदीप का समीक्षात्मक अध्ययन।
निर्देशक : प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज
Th 24695

सारांश
(असत्यापित)

भारतीय दर्शन वाङ्मय में मीमांसा दर्शन का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। पूर्वमीमांसा का मूल ग्रन्थ जैमिनिसूत्र (300-200) हैं जो कुल 60 पाद एवं 895 अधिकरण तथा 2745 सूत्रों में निबद्ध है। मीमांसासूत्र सोलह अध्यायों में निबद्ध है। इस मीमांसाशास्त्र के सोलह अध्यायों में बारह अध्याय 'द्वादशलक्षणी' तथा अन्तिम चार अध्याय 'संकर्षकांड' या 'देवताकाण्ड' के नाम से प्रसिद्ध है। मीमांसा के व्याख्याकारों में कुमारिलभट्ट और प्रभाकर (गुरु) दो सम्प्रदाय प्रमुख हुए। वस्तुतः मीमांसा-दर्शन पर 'जैमिनिसूत्र', 'शाबरभाष्य', 'श्लोकवार्तिक', 'तन्त्रावार्तिक', 'शास्त्रदीपिका', 'न्यायसुधा', 'मीमांसान्यायप्रकाश', 'अर्थसंग्रह' आदि अनेकों ग्रन्थों की रचना हुई है किन्तु श्रीकण्वशंकरकृत 'मीमांसार्थप्रदीप' नामक प्रकरण ग्रन्थ की रचना 18वीं शताब्दी में की गई। जिसमें मीमांसादर्शन के सभी तथ्यों को प्रस्तुत करने में श्रीकण्वशंकर सराहनीय योगदान रहा। यद्यपि मीमांसार्थप्रदीप इस प्रकरण ग्रन्थ का आकार में लघु होने पर भी वैदुष्यपूर्ण विवेचन की दृष्टि से मीमांसा-सम्मत अन्य प्रमुख ग्रन्थों से तुलना की जा सकती है। जिसमें प्रथम अध्याय में 'अध्ययनविधि-विचार' को प्रस्तुत किया गया है। द्वितीय अध्याय में 'धर्मस्वरूप-विचार' का वर्णन किया गया है। तृतीय अध्याय में 'विधि निरूपण'

किया गया है। चतुर्थ अध्याय में 'भावना-विधि' के स्वरूप एवं उसके भेदों की चर्चा की गई है। पंचम अध्याय में विधि के अन्य भागों का जिसमें 'निषेध, मन्त्र, नामधेय एवं अर्थवाद' का विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में 'मीमांसा-सम्मत धर्म के उद्देश्य' के अन्तर्गत स्वर्ग एवं स्मार्त्त धर्मों का वेदगम्यत्व तथा मोक्ष के स्वरूप का निरूपण किया गया है। अतः मीमांसासम्मत सिद्धान्तों का मीमांसान्यायप्रकाश व अर्थसंग्रह से मीमांसार्थप्रदीप का तुलनात्मक व विश्लेषणात्मक अध्ययन करते हुए मीमांसा के मुख्य प्रतिपाद्य विषय 'धर्म' के दार्शनिक सिद्धांतों के महत्त्वपूर्ण तथ्यों को प्रस्तुत किया गया है।

विषय सूची

1. अध्ययन विधि-विचार 2. धर्मस्वरूप विचार 3. विधि-निरूपण 4. भावना-विचार 5. निषेध, मन्त्र, नामधेय, अर्थवाद 6. मीमांसा-सम्मत धर्म के उद्देश्य। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

16. पाल (रश्मि)
वेदान्तासुधा में प्रतिपादित कबीर सम्मत अद्वैत वेदान्त।
निर्देशक : डॉ. रणजित बेहेरा
Th 24691

सारांश
(असत्यापित)

आधुनिक वेदान्ती स्वामी श्री ब्रह्मलीन मुनि (20वीं शताब्दी के लगभग) प्रणीत 'वेदान्तसुधा' और 'कबीरदास' के अद्वैत वेदान्त परक दार्शनिक विचारों और सिद्धान्तों के समग्र विचारों को सार रूप में प्रस्तुत करता हुआ शोध-प्रबंध छः अध्यायों में विभाजित हैं- प्रथम अध्याय में अनुबन्ध-चतुष्टय के पूर्वपक्ष और सिद्धान्तपक्ष को स्थापित किया गया है और ज्ञान के अष्ट साधनों के रूप में विवेकादि साधनों की विवेचना की गयी है। मोक्ष का एकमात्र साधन 'ज्ञान' ही है। ज्ञान प्राप्ति का मार्ग प्रशस्तक 'गुरु' है जिसको गुरु-शिष्य संवादोपदेश के माध्यम से सरल और सुबोध शैली में वर्णित किया गया है। द्वितीय अध्याय में अद्वैत वेदान्त दर्शन के तत्त्वमीमांसा के प्रमुख सिद्धान्तों जीव, माया, ईश्वर, ब्रह्म और आत्मा और सृष्टि इत्यादि का 'वेदान्तसुधा' के आलोक में प्रस्तुत किया गया है। तृतीय अध्याय में 'वेदान्तसुधा' के आलोक में ज्ञान-मीमांसा सम्बन्धी ख्यातिवाद, प्रमाण और स्वाप्नपदार्थ और जाग्रत्पदार्थानुभव इत्यादि का वर्णन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में आचार-मीमांसा के रूप में बन्ध और मोक्ष को बताते हुए मोक्ष के इच्छुक साधक के लिए उत्तर मीमांसा को स्थापित किया है।पंचम अध्याय में महावाक्य के सन्दर्भ में शब्द-शक्ति का विवेचन करते हुए लक्षणा द्वारा महावाक्य

के अर्थबोध को सिद्ध किया गया है।षष्ठ अध्याय में 'वेदान्तसुधा' में वर्णित अद्वैतवादी दार्शनिक सिद्धान्त और कबीरदास के दार्शनिक सिद्धान्तों का विवेचन किया गया है और उनका तुलनात्मक अध्ययन के उपरान्त निष्कर्ष निकलता है कि दोनों में समानता और विषमता दृष्टिगोचर होती है किन्तु यह भिन्नता मात्र शब्दों की है सिद्धान्त दोनों के एक ही परिपाटी के है। अतः प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध का सारांश यही निकलता है कि वेदान्तसुधा और कबीरदास के अद्वैतवादी दार्शनिक सिद्धान्तों के विचारों को द्योतित करता है।

विषय सूची

1. वेदान्तसुधा का विषय-निरूपण 2. वेदान्तसुधा में प्रतिपादित तत्त्वमीमांसा 3. वेदान्तसुधा में प्रतिपादित ज्ञानमीमांसा 4. वेदान्तसुधा में प्रतिपादित आचार-मीमांसा रूप में बन्ध और मोक्ष 5. महावाक्यों के सन्दर्भ में शब्दशक्ति-विवेचन 6 वेदान्तसुधा में प्रतिपादित कबीरदास सम्मत अद्वैत वेदान्त के दार्शनिक सिद्धान्तों का विवेचन। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

17. मिश्र (चन्दन कुमार)
7वीं शताब्दी ई. तक के भारतीय अभिलेखों में कर-व्यवसाी तथा कौटिलीय अर्थशास्त्र का उन पर प्रभाव।
निर्देशिका : डॉ. पूर्णिमा कौल
Th 24684

विषय सूची

1. प्राचीन भारतीय साहित्य में कर-व्यवस्था की संकल्पना 2. अर्थशास्त्र में कर-व्यवस्था का विधान 3. 7वीं शताब्दी ई. तक भारत की राजनैतिक स्थिति 4. 7वीं शताब्दी ई. तक के भारतीय अभिलेखों में कर-व्यवस्था का स्वरूप 5. प्राचीन भारतीय अभिलेखीय कर व्यवस्था पर अर्थशास्त्र का प्रभाव। उपसंहार। चित्र-सूची। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

18. मिश्र (शेषनाथ)
हर्षदेव माधव की कृतियों में निरूपित सामाजिक व सांस्कृतिक चेतना।
निर्देशक : प्रो. गिरीश चन्द्र पन्त
Th 24676

सारांश
(असत्यापित)

शोध का सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य, ज्ञान के सभी क्षेत्रें में नवीन तथ्यों का अन्वेषण करना है और साथ ही साथ समयानुकूल उसकी उपयोगिता एवं सार्थकता का परीक्षण करके, उसको सम्यक्रूप से प्रस्तुत करना है। मेरे शोध का शीर्षक ''हर्षदेव माधव की कृतियों में निरूपित सामाजिक व सांस्कृतिक चेतना'' है। शोध-प्रबन्ध का विषय 'हर्षदेव माधव की कृतियों में निरूपित

सामाजिक व सांस्कृतिक चेतना' है। इसके प्रथम अध्याय को तीन भागों में विभाजित किया गया है, जिसमें प्रथम भाग का नाम 'आधुनिक संस्कृत साहित्य का परिचय' है तथा दूसरे भाग का नाम 'हर्षदेव माधव का व्यक्तित्व एवं तीसरे भाग का नाम 'हर्षदेव माधव का कर्तृत्व' है। इस शोध-प्रबन्ध के द्वितीय अध्याय का नाम ''आधुनिक संस्कृत साहित्य की प्रवृत्तियाँ'' है। इस अध्याय में आधुनिक संस्कृत साहित्य की सभी प्रवृत्तियों का विवेचन किया गया है। प्रस्तुत शोधप्रबंध के तृतीय अध्याय का नाम ''आधुनिक संस्कृति साहित्य में काव्यवाद'' है। आचार्य हर्षदेव माधव अपनी रचना 'वागीश्वरीकण्ठसूत्रम्' में विभिन्न 'वादों' का विस्तार से वर्णन किया है। चतुर्थ अध्याय का नाम 'हर्षदेव माधव की कृतियों में निरूपित सामाजिक चेतना' है। इस अध्याय में प्रो- माधव द्वारा रचित जो गद्य या पद्य हैं, उन सभी में समाज से जुड़े हुए सभी विषयों का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय का नाम ''हर्षदेव माधव की कृतियों में निरूपित सांस्कृतिक चेतना'' है। इसमें सांस्कृतिक विषयों का विवेचन किया गया है। इस शोधप्रबंध के छठे अध्याय का नाम 'आधुनिक परिप्रेक्ष्य में हर्षदेव माधव तथा उनकी कृतियों का मूल्यांकन' है। निष्कर्ष -''हर्षदेव माधव की कृतियों में निरूपित सामाजिक व सांस्कृतिक चेतना'' यह मेरे शोध-प्रबन्ध का विषय है। प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध छः अध्यायों में विभक्त है। इसके सभी अध्यायों में शोधार्थी द्वारा चयनित सभी विषयों का विवेचन प्रमुखता से करने का प्रयास किया गया है।

विषय सूची

1. आधुनिक संस्कृत साहित्य का परिचय 2. आधुनिक संस्कृत साहित्य की प्रवृत्तियाँ 3. आधुनिक संस्कृत साहित्य में काव्यवाद 4. हर्षदेव माधव की कृतियों में निरूपित सामाजिक चेतना 5. हर्षदेव माधव की कृतियों में निरूपित सांस्कृतिक चेतना 6. आधुनिक परिप्रेक्ष्य में हर्षदेव माधव तथा उनकी कृतियों का मूल्यांकन। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

19. मीनाक्षी
अवेस्ता एक अध्ययन : वैदिक साहित्य के आलोक में।
निर्देशक : प्रो. रमेंश चन्द्र भारद्वाज
Th 24677

सारांश
(असत्यापित)

ईरान के प्राचीनतम साहित्य अवेस्ता में वर्णित धार्मिक सामाजिक भाषिक एवं सांस्कृतिक विषयों का वैदिक साहित्य के आलोक में तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता हुआ शोध प्रबन्ध पांच अध्यायों में विभाजित है। प्रथम अध्याय में पारसी यूरोपियन और भारतीय विद्वानों के अनुसार अवेस्ता पृथु पर्शु इत्यादि शब्दों की निरुक्ति प्रस्तुत की गयी है तदनन्तर अवेस्ता

काल निर्धारण के संबंध में पारसी परम्परा ग्रीक स्रोत एवं भाषिक साहित्यिक साक्ष्यों को आधार मानकर विवेचना की गयी है। द्वितीय अध्याय में मूल भारोपीय भाषा की पृष्ठभूमि में अवेस्ता एवं वैदिक स्वर ध्वनियों समासों का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है। इसी क्रम में अवेस्तीय शब्दों का अर्थवैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन करते हुए इसकी शब्दावली में तीन प्रकार के परिवर्तन अर्थात् अर्थापकर्ष अर्थसंकोच एवं अर्थविस्तार का निदर्शन भी किया गया है। तृतीय अध्याय में अवेस्तीय मन्त्रों में प्रयुक्त छन्दोयोजना को प्रस्तुत किया गया है वैदिक छन्द गायत्री त्रिष्टुप् पंक्ति अनुष्टुप आसुरी गायत्री उष्णिक् का अवेस्तीय मन्त्रों में प्रयुक्त छन्दो से तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में अवेस्तीय यजत यिम आतर हओम उशह अपाम् नपत् मिथ्र अइर्यमन वयु इत्यादि का वैदिक साहित्य में वर्णित इनके समकक्ष रुपों के साथ तुलनात्मक वर्णन किया गया है जिससे विदित होता है कि दोनों परम्पराओं में वर्णित देवों तथा यजतों के गुण विशेषताएं तथा उनके लिए प्रयुक्त विशेषण समान होने से उनका स्वरुप एक ही है। वैदिक तथा ईरानी समाज में विकसित विभिन्न संस्कार यज्ञ अनुष्ठान को समझने तथा दोनों परम्पराओं के मध्य विद्यमान सांस्कृतिक गूढ़ता को जानने हेतु पंचम अध्याय में सोम यज्ञ विवाह संस्कार नवजोत संस्कार अंत्येष्टि संस्कार का विशद वर्णन किया गया है। इस प्रकार उपर्युक्त पांचों अध्यायों के माध्यम से पुरातनकालीन वैदिक एवं अवेस्तीय सभ्यता संस्कृति के मध्य गहन अन्तः सम्बन्धों को समझने का विनम्र प्रयास किया गया है।

विषय सूची

1. अवेसता वाङ्मय एवं ईरानी इतिहास का सर्वेक्षण 2. वेदिक तथा अवेस्ता साहित्य में भाषातत्त्व 3. वैदिक तथा अवेस्ता साहित्य में छन्दोयोजना 4. वैदिक तथा अवेस्ता साहित्य में देवतातत्त्व 5. वैदिक एवं अवेस्ता साहित्य में सामाजिकता। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

20. यादव (घनश्याम)
आधुनिक अवदानकाव्यों का काव्यशास्त्रीय अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. रंजन कुमार त्रिपाठी
Th 24674

सारांश
(असत्यापित)

संस्कृत साहित्य परम्परा की कड़ी में आधुनिक अवदानकाव्य विषयक ग्रन्थों को आधार बनाकर काव्यशास्त्रीय अध्ययन उक्त शोध-प्रबन्ध में किया गया। मुख्य रूप से षट्प्रस्थान को इसमें प्रतिपादित किया गया है। अवदानकाव्यों में प्रमुख रूप से डॉ. निरञ्जन मिश्र विरचित 'गंगापुत्रावदानम्' एवं रेवाप्रसाद द्विवेदी कृत 'हरिहरावदानकाव्य' एवं 'रत्नस्वरूपावदान

काव्य' में काव्यशास्त्री तत्त्वों का अन्वेषण किया गया है। शोध-प्रबन्ध प्रस्थानों के आधार पर 6 अध्यायों में विभक्त है। प्रथम अध्याय 'आधुनिक अवदानकाव्यों में रस सम्प्रदाय की दृष्टि से अध्ययन' है। उक्त अध्याय में हास्य रस के अतिरिक्त सभी रसों का सोदाहरण विवेचन प्रस्तुत है। अन्त में इसका निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है। द्वितीय अध्याय 'आधुनिक अवदानकाव्यों का अलङ्कार शास्त्र की दृष्टि से अध्ययन' प्रस्तुत है जिसमें शब्दालङ्कार, अर्थालङ्कार के रूप मम्मट कृत काव्यप्रकाश के आधार पर निरूपित किया गया है। जिसमें मुख्यतः अनुप्रास, यमक, श्लेष, यमक, रूपक, अतिशयोक्ति, विभावना, विशेषोक्ति, दीपक, अर्थान्तरन्यास दृष्टान्त इत्यादि का वर्णन है। तृतीय अध्याय 'आधुनिक अवदानकाव्यों का रीति सिद्धान्त की दृष्टि से अध्ययन' है। जिसमें मम्मट के गुणों के आधार पर उसका विवेचन प्रस्तुत है। मुख्य रूप से वैदभी, पाञ्चाली एवं गौड़ी रीति को विवेचित किया है। चतुर्थ अध्याय 'आधुनिक अवदानकाव्यों का ध्वनि सिद्धान्त की दृष्टि से अध्ययन' प्रस्तुत है। जिसमें ध्वनि का अर्थ, पूर्व पात्रों का खण्डन एवं ध्वनि की प्रतिस्थापना के साथ उनके प्रमुख भेदों का निरूपण हुआ है जिसमें अविवक्षितवाच्यध्वनि के अर्थान्तरसंक्रमितवाच्य ध्वनि एवं अत्यन्ततिरस्कृतवाच्य ध्वनि तथा विवक्षितान्यपरवाच्य ध्वनि के असंलक्ष्यक्रमव्यंग्य ध्वनि एवं संलक्ष्यक्रमव्यंग्य ध्वनि के उदाहरणों को प्रमुख रूप से विवेचित किया गया है। पञ्चम अध्याय 'आधुनिक अवदानकाव्यों में वक्रोक्ति सिद्धान्त की दृष्टि से अध्ययन' हुआ है। जिसमें वर्णविन्यासवक्रता प्रबन्धवक्रता का संक्षेप में निरूपण हुआ है। शोध-प्रबन्ध का अन्तिम एवं षष्ठ अध्याय 'आधुनिक अवदानकाव्यों का औचित्य सिद्धान्त की दृष्टि से अध्ययन' हुआ है।

विषय सूची

1. विषय-प्रवेश 2. अवदानकाव्यों का रस-प्रस्थान की दृष्टि से अध्ययन 3. अवदानकाव्यों का अलङ्कार-प्रस्थान की दृष्टि से अध्ययन 4. अवदानकाव्यों का रीति-सिद्धान्त की दृष्टि से अध्ययन 5. अवदानकाव्यों का ध्वनिप्रस्थान की दृष्टि से अध्ययन 6. अवदानकाव्यों का वक्रोक्ति-प्रस्थान की दृष्टि से अध्ययन 7. अवदानकाव्यों का औचित्य-प्रस्थान की दृष्टि से अध्ययन। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

21. राघवेन्द्र

वैयाकरणभूषणसार के समासशक्तिनिर्णय एवं नञर्थनिर्णय का शाङ्करी टीका का समीक्षात्मक अध्ययन।

निर्देशिका : डॉ. सन्ध्या राठौर

Th 24685

सारांश

(असत्यापित)

इस शोधप्रबन्ध में समासभेद, समासगतवृत्ति एवं सामर्थ्य, समास में शक्ति अौर नञर्थविचार पर वैयाकरणों, नैयायिकों तथा मीमांसकों के मतों की समीक्षा शंकर शास्त्री के व्याख्यान के

अाधार पर उपसंहार सहित छः अध्यायों में प्रस्तुत की गयी है| यह शोधकार्य व्याकरण व व्याकरणदर्शन के महत्वपूर्ण विषय समास, समासशक्ति अौर नञर्थ को समझने तथा आगामी शाोधकार्यों के लिए अत्यन्त उपादेय है|

विषय सूची

1. संस्कृत व्याकरणदर्शन तथा वैयाकरणभूषणसार 2. समास का स्वरूप एवं भेद 3. समासगत वृत्ति एवं सामर्थ्य 4. समास में शक्ति 5. नञर्थविचार। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

22. रामेश्वर

वैयाकरणभूषणसार की शाङ्करी टीका का समीक्षात्मक अध्ययन (धात्वर्थ निर्णय के सन्दर्भ में)

निर्देशिका : डॉ. रेखा अरोड़ा

Th 24689

सारांश

(असत्यापित)

वैयाकरणभूषणसार व्याकरणदर्शन का संक्षिप्त एवं सारगर्भित दार्शनिक ग्रन्थ है इस ग्रन्थ में आचार्य कौण्डभट्ट ने व्याकरणदर्शन के सभी पक्षों का विवेचन किया है। इस ग्रन्थ की दार्शनिक और उपयोगिता को देखते हुए अनेक विद्वानों ने टीकाएँ लिखी उन टीकाओं में शाङ्करीटीका विशेष स्थान रखती है इस टीका में शङ्करशास्त्री ने मीमांसक नैयायिक अन्य दार्शनिक विचारकों के धात्वर्थ विषयक मतों को सरलतापूर्वक स्पष्ट किया है। इस शोध-कार्य में शोधार्थी द्वारा धात्वर्थ निर्णय पर विभिन्न दार्शनिकों के मतों का स्पष्टीकरण किया गया है। इस शोध-कार्य को छः अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय में व्याकरणदर्शन, व्याकरणदर्शन की परम्परा, कौण्डभट्ट व्यक्तित्व कृतित्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय 'धात्वर्थ विचार' है। इसमें धातु के अर्थ पर विभिन्न दार्शनिकों एवं वैयाकरणों के मतों का उल्लेख करते हुए शङ्करशास्त्री ने धात्वर्थ विषय मत को स्पष्ट किया है। तृतीय अध्याय 'तिङर्थ विचार' है इसमें तिङर्थ विषयक मत पर नैयायिक, मीमांसक और वैयाकरणों के मतों को स्पष्ट करते हुए शङ्करशास्त्री ने कौण्डभट्ट की रीत्यानुसार तिङ् के मत में स्वमत की स्थापना की है। चतुर्थ अध्याय 'पदार्थ विचार' है। इसमें पद और पदार्थ सम्बन्धी मतों को स्पष्ट किया गया है, जिसमें वैयाकरणों, नैयायिकों, मीमांसकों के पद सम्बन्धी मतों को विवेचित किया गया है। पंचम अध्याय 'वाक्यार्थ विचार' है। इसमें वाक्यार्थ विषयक के मत में विभिन्न वैयाकरणों और दार्शनिकों के मतों का प्रस्तुतीकरण किया गया है। छठे अध्याय में 'शङ्करशास्त्री का मूल्यांकन' है। यह टीका धात्वर्थ सम्मत सभी मतों को प्रस्तुत करते हुए कौण्डभट्ट के मत की पुष्टि करती है। प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में शाङ्करीटीका के

धात्वर्थ प्रकरण का समीक्षात्मक दृष्टि से अध्ययन किया गया है। इस टीका का मुख्य उद्देश्य कौण्डभट्ट सम्मत नव्य-न्याय शैली में धात्वर्थ निर्णय को अध्येताओं के लिए सुबोध्य बनाना है।

विषय सूची

1. दर्शन शब्द का अभिप्राय 2. धातु का अर्थ 3. तिङर्थ विचार 4. पदार्थ विचार 5. वाक्यार्थ विचार 6. धात्वर्थ विषयक मत के सन्दर्भ मं शङ्करशास्त्री का मूल्यांकन। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

23. विजयलक्ष्मी

वक्रोक्तिसिद्धान्त की दृष्टि से भवभूति के रूपकों का अध्ययन।

निर्देशक : डॉ. वेद प्रकाश डिंडोरिया

Th 24675

सारांश

(असत्यापित)

शोध का सबसे महत्त्वपूर्ण लक्ष्य ज्ञान के सभी क्षेत्रों में नवीन एवं मौलिक तत्त्वों का अन्वेषण करके उसको सम्यक् रूप से प्रस्तुत करना है। मेरे शोध का शीर्षक ''वक्रोक्तिसिद्धान्त की दृष्टि से भवभूति के रूपकों का अध्ययन''। छः सिद्धान्त मुख्य है- रससिद्धान्त, अलङ्कारसिद्धान्त, रीतिसिद्धान्त, ध्वनिसिद्धान्त, वक्रोक्तिसिद्धान्त, औचित्यसिद्धान्त। आचार्य कुन्तक ने वक्रोक्ति को मुख्य रूप से छः भागों में बाँटा है- वर्णविन्यासवक्रता, पदपूर्वार्द्धवक्रता, पदपरार्द्धवक्रता, वाक्यवक्रता, प्रकरणवक्रता, प्रबन्धवक्रता। भवभूति ने अपने रूपकों में वक्रोक्ति का विशद प्रयोग किया है। वक्रोक्ति के छः भेदों एवं प्रभेदों का प्रयोग काव्य में दर्शनीय है। प्रथम अध्याय: भवभूति के रूपकों में वर्णविन्यासवक्रता वर्णविन्यासवक्रता के प्रायः सभी प्रसिद्ध प्रयोगों को कुन्तक ने अपनी वर्णविन्यासवक्रता के अन्तर्गत स्वीकार किया है। द्वितीय अध्याय: भवभूति के रूपकों में पदपूर्वार्द्धवक्रता आचार्य कुन्तक ने पदपूर्वार्द्ध-वक्रता के अन्तर्गत प्रातिपदिक तथा धातु-रूप प्रकृति पर आश्रित सौन्दर्य का आठ मुख्य एवं अन्य अवान्तर भेदों में विस्तार से विन्यास किया है। तृतीय अध्यायः भवभूति रूपकों में पदपरार्द्धवक्रता सुप्प्रत्यय से सम्बन्धित कारक-वक्रता व संख्या-वक्रता का विचार तथा तिङ्प्रत्यय से सम्बन्धित काल-संख्या-पुरुष-उपग्रह-प्रत्ययवक्रता का विचार किया गया है। चतुर्थ अध्याय: भवभूति के रूपकों में वाक्यवक्रता भवभूति के रूपकों में अन्य प्राचीन आचार्यों द्वारा कहे गये अनन्वय, तुल्ययोगिता, निदर्शना प्रतिवस्तूपमा व परिवृत्त आदि अलंकारों को प्रतीयमानोपमा में अन्तर्भावित किया है। प॑ंचम अध्यायः भवभूति के रूपकों में प्रकरणवक्रता प्रकरणवक्रता के भेदों के आलोक में अनुसन्धेय

भवभूति के रूपकों की समीक्षा करने पर प्रायः सभी भेदों का समायोजन हमें प्राप्त होता है। षष्ठ अध्याय: भवभूति के रूपकों में प्रबन्धवक्रता भवभूति के रूपकों में प्रबन्ध-वक्रता विषयक अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि कुन्तक के अनुसार प्रबन्ध निर्माण का सामथ्र्य कवि की प्रौढ़ता का परिचायक है। सप्तम अध्याय: उपसंहार इस प्रकार 'वक्रोक्ति-सिद्धान्त की दृष्टि से भवभूति के रूपकों का अध्ययन' इस विषय पर शोधार्थिनी द्वारा शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किया गया है।

विषय सूची

1. भवभूति के रूपकों में वर्णविन्यासवक्रता 2. भवभूति के रूपकों में पदपूर्वार्द्धवक्रता 3. भवभूति के रूपकों में पदपरार्द्धवक्रता 4. भवभूति के रूपकों में वाक्यवक्रता 5. भवभूति के रूपकों में प्रकरण-वक्रता 6. भवभूति के रूपकों में प्रबन्ध-वक्रता 7. उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

24. विपिन कुमार
महाभाष्यरत्नप्रकाश का समीक्षात्मक अध्ययन (2.1.1 से 2.2.38 पर्यन्त)
निर्देशक : डॉ. ओमनाथ बिमली
Th 24700

सारांश
(असत्यापित)

महाभाष्य के व्याख्यान में नूतन अवधारणाओं के स्रष्टा होने व भाष्याशय के रहस्योद्घाटन में अत्यन्त प्रखर भूमिका प्रदान करने पर भी शिवरामेन्द्रकृत रत्नप्रकाश पर अद्यावधि शोधकार्य नगण्य बराबर ही हुए हैं। इस अध्ययन के द्वारा हमें एतत्कालपर्यन्त समागत विचारों, मान्यताओं का सुस्पष्ट बोध प्राप्त हो सकेगा। शोधकार्य की प्रस्तुति की उचित व्यवस्था के लिए प्रस्तुत प्रबन्ध को 9 अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रत्येक अध्याय में वर्णित विषय की संक्षिप्त रूपरेखा निम्नलिखित प्रकार से है - प्रथम अध्याय- 'समर्थः पदविधिः' भाष्य पर रत्नप्रकाश की समीक्षा द्वितीय अध्याय- अव्ययीभावसमाससम्बन्धिसूत्रभाष्यों पर रत्नप्रकाश की समीक्षा तृतीय अध्याय- कर्मधारयसमाससम्बन्धिसूत्रभाष्यों पर रत्नप्रकाश की समीक्षा चतुर्थ अध्याय- विभक्तितत्पुरुषसम्बन्धिसूत्रभाष्यों पर रत्नप्रकाश की समीक्षा पञ्चम अध्याय- नञ्समाससम्बन्धिसूत्रभाष्य पर रत्नप्रकाश की समीक्षा षष्ठ अध्याय- प्रादितत्पुरुष तथा उपपदतत्पुरुषसमाससम्बन्धिसूत्रभाष्यों पर रत्नप्रकाश की समीक्षा सप्तम अध्याय- बहुव्रीहिसमाससम्बन्धिसूत्रभाष्यों पर रत्नप्रकाश की समीक्षा अष्टम अध्याय- द्वन्द्वसमाससम्बन्धिसूत्रभाष्य पर रत्नप्रकाश की समीक्षा नवम अध्याय- विविध यह कहा जा सकता है कि शिवरामेन्द्र सरस्वती ने जिस भी स्थल पर किसी आचार्य का प्रत्याख्यान किया है, वहाँ हेतुओं का उपन्यास भी किया है। परन्तु कुछ स्थल ऐसे भी हैं जहाँ पर

प्रत्याख्यान की आवश्यकता नहीं थी क्योंकि दोनों आचार्य एक ही तथ्य की स्थापना कर रहे हैं, तथापि शब्दनिग्रहपूर्वक प्रत्याख्यान कर दिया गया है। यह सत्य है कि कतिपय स्थलों पर कैयट के प्रति इनका दुराग्रह भी लक्षित होता है, तथापि अनेकत्र भाष्यव्याख्यान की सुस्पष्ट प्रतिपत्ति के लिए रत्नप्रकाश का अध्ययन अपेक्षित है। अन्ततः यह कहा जा सकता है कि व्याकरणक्षेत्र में महाभाष्य के विचारों का सम्यग् ज्ञान पाने के लिए, नवीन विचारों के प्रवर्तन व चिन्तन के नवीन आयामों से परिचय के लिए शिवरामेन्द्रसरस्वतीकृत महाभाष्यरत्नप्रकाश महाभाष्य के अध्ययन में अत्यन्त उपयोगी है।

विषय सूची

1. समर्थः पदविधिः भाष्य पर महाभाष्यरत्नप्रकाश की समीक्षा 2. अव्ययीभावसमाससम्बन्धिसूत्रभाष्यों पर महाभाष्यरत्नप्रकाश की समीक्षा 3. कर्मधारयतत्पुरुषसमाससम्बन्धिसूत्रभाष्यों पर महाभाष्यरत्नप्रकाश की समीक्षा 4. विभक्तितत्पुरुषसमाससम्बन्धिसूत्रभाष्यों पर महाभाष्यरत्नप्रकाश की समीक्षा 5. नञ्त त्पुरुषसमाससम्बन्धिसूत्रभाष्यों पर महाभाष्यरतनप्रकाश की समीक्षा 6. प्रादितत्पुरुष तथा उपपदत त्पुरुषसमाससम्बन्धिसूत्रभाष्यों पर महाभाष्यरत्नप्रकाश की समीक्षा 7. बहुव्रीहिसमाससम्बन्धिसूत्रभाष्यों पर महाभाष्यरत्नप्रकाश की समीक्षा 8. द्वन्द्वसमाससम्बन्धिसूत्रभाष्यों पर महाभाष्यरत्नप्रकाश की समीक्षा। उपसंहार/निष्कर्ष। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

25. विवके कुमार

संस्कृतक्रियापदों का सङ्गणकीय अभिज्ञान, विश्लेषण एवं रूपसिद्धि हेतु वेब आधारित तन्त्र का विकास : सिद्धान्तकौमुदी में विश्लेषित भ्वादिगण के सन्दर्भ में।

निर्देशक : डॉ. सुभाष चन्द्र

Th 24703

सारांश

(असत्यापित)

संस्कृत में सुबन्त एवं तिङन्त प्रकार के दो पद होते हैं । जिनके अन्त में तिबादि (तिप्-महिङ्) अठारह प्रत्यय लगे होते हैं उन्हें तिङन्त पद कहा जाता है । संस्कृत भाषा में लगभग 2000 धातुएं हैं, जिनसे क्रियापद निष्पन्न होते हैं । प्रस्तुत शोधप इन्हीं तिङन्त पदों की रूपसिद्धिप्रक्रिया के लिये एक ऑनलाइन सिस्टम को प्रस्तुत करता है । इन दस गणों में से सर्वप्रथम गण भ्वादिगण है। भारतीय विश्वविद्यालयीय शिक्षा प्रणाली में प्रक्रिया ग्रन्थों का अध्ययन कराया जाता है । श्रीमद्भट्टोजिदीक्षित विरचित वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी इसका प्रमुख एवं सम्प्रतिष्ठित प्रक्रिया ग्रन्थ है । प्रस्तुत शोध का उद्देश्य सिद्धान्तकौमुदी में विश्लेषित भ्वादिगण की क्रियाओं के कर्तृवाच्य के सभी लकारों में क्रियापदरूपसिद्धि हेतु विकसित करना है । जिसके माध्यम से संस्कृत साहित्य में प्रयुक्त भ्वादिगणीय क्रियापदों की

सिद्धि प्रक्रिया (Word formation process) का ज्ञानार्जन किया जा सकता है । यह सिस्टम सूचना प्रौद्योगिकी के युग में संस्कृत क्रियापदसिद्धि के लिये एक ई-लर्निंग स्तर (प्लेटफॉर्म) उपलब्ध कराता है । जिसके माध्यम से छात्र अथवा शिक्षक स्वयं सिद्धिप्रक्रिया सीख व सिखा सकते हैं। यह सिस्टम संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय की वेबसाइट http://cl.sanskrit.du.ac.in पर उपलब्ध है । इस सिस्टम के माध्यम से विद्यार्थी भ्वादिगण में पठित किसी भी धातु के रूप की ससूत्र सिद्धि सिद्धान्तकौमुदी के आधार पर ऑनलाइन प्राप्त कर सकता है । साथ ही साथ किसी भी सूत्र पर कर्सर ले जाकर उस सूत्र का अर्थ एवं क्लिक करके व्याख्या भी प्राप्त कर सकता है । इस शोध के माध्यम से सिद्धान्तकौमुदी में विश्लेषित भ्वादिगण की क्रियाओं के कर्तृवाच्य के सभी लकारों में क्रियापदरूपसिद्धि हेतु ऑनलाइन सिस्टम का विकास किया गया है ।

विषय सूची

1. संस्कृत व्याकरण एवं संस्कृत क्रियापद 2. संस्कृत धातुओं का परिचय, भ्वादिगणीय धातुएं एवं शोध सर्वेक्षण 3. क्रियारूपसिद्धि के मूलभूत तथ्य एवं भ्वादिगणस्थ धातुओं की रूपसिद्धि प्रक्रिया 4. संगणकीयरूपसिद्धिहेतु भ्वादिगणीय धातओं का पुनर्विभाजन एवं संगणकीय नियमों का विकास 5. वेब आधारित संस्कृतक्रियारूप का अभिज्ञान, विश्लेषण एवं रूपसिद्धि सिस्टम का परिचय तथा उपलब्ध सिस्टम का मूल्यांकन। निष्कर्ष एवं भावी अनुसंधान संभावनाएँ। सन्दर्भ ग्रंथ सूची। परिशिष्ट। प्रकाशित शोधपत्र सूची एवं प्रथम पृष्ठ।

26. वीरेन्द्र कुमार
विशिष्टाद्वैत की तत्त्वमीमांसा (न्यायसिद्धाञ्जन एवं वेदान्तकारिकावली के संदर्भ में)।
निर्देशिका : डॉ. मायावती
Th 24927

सारांश
(असत्यापित)

शोधकार्य के निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि विशिष्टाद्वैत की तत्त्वमीमांसा का निरूपण आचार्य वेदान्तदेशिक द्वारा न्यायसम्मत विशिष्टाद्वैत की तत्त्वमीमांसा के रूप में प्रस्तुत किया है, जो विशिष्टाद्वैत सम्प्रदाय को प्रबलता प्रदान करता है तथा जनमानस में इस दर्शनशास्त्र को जानने की जिज्ञासा उत्पन्न करता है। आचार्य रामानुज के दार्शनिक विचारों को वेदान्तदेशिक से बुच्चि वेंकटाचार्य तक काल-यात्रा से भी इस शोधकार्य से पता चलता है कि आधुनिक समय में भी इस परम्परा का महत्त्व दृष्टिगोचर होता है। इसमें जिस प्रकार से विशिष्टाद्वैत के तत्त्वों में मुख्यतः तीन तत्त्व बतलाए गए हैं, जिसमें ईश्वर प्रधान तथा चित् यानि जीव तथा अचित् यानि जगत से विशिष्ट ब्रह्म 'ईश्वर' का अद्वैतत्व अभिप्रेत है।

वेदान्तदेशिक जी ने प्रकृति, काल, नित्यविभूति एवं धर्मभूत ज्ञान तथा ईश्वर एवं जीव के रूप में तत्त्वों का विवेचन किया है तथा इस शोध-कार्य में प्रस्तुत तत्त्व मीमांसा का भव्य दर्शन परम्परा में क्या स्थिति है, इसका भी वर्णन किया गया है। यह विशिष्टाद्वैत के पुरातन से नूतन तक मत-मतान्तरों से इसको पुष्ट करता है।

विषय सूची

1. विषय प्रवेश 2. विशिष्टाद्वैत की तत्त्वमीमांसा 3. प्रकृति एवं काल 4. नित्यविभूति एवं धर्मभूतज्ञान 5. जीव और ईश्वर 6. अद्रव्य निरूपण। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

27. शर्मा (प्रवीण)
उत्तरपाणिति व्याकरणसम्प्रदायों में पदपदार्थ चिन्तन।
निर्देशिका : डॉ. अञ्जू सेठ
Th 24699

सारांश
(असत्यापित)

संस्कृतव्याकरण परम्परा में भाषा के विषय में प्राचीन काल से ही चिन्तन होता रहा है।..... प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में पाणिनि व्याकरण से उत्तरवर्ती व्याकरणपरम्परा में पद एवं पदार्थ विषयक विवेचन प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का विभाजन पाँच अध्यायों में किया गया है। विषय प्रवेश में पद तथा पदार्थ विषय की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए प्राचीन काल के विभिन्न आचार्यों के मतों विवेचन किया है, साथ ही पाणिनीयोत्तर व्याकरण सम्प्रदायों का सामान्य परिचय प्रस्तुत करते हुए उनके सिद्धान्तों का भी प्रतिपादन किया है। प्रथम अध्याय में पद-परिभाषा के सन्दर्भ में विभिन्न वैयाकरणों मतों का विवेचन करते हुए उनका तुलनात्मक अध्ययन किया है तथा पद-विभाग विषयक चिन्तन किया है जिसमें पद के अवयवों का विवेचन करते हुए विभिन्न आचार्यों के मतों को प्रस्तुत किया है। द्वितीय अध्याय में सुबन्त तथा तिङन्त प्रत्ययों के द्वारा पदरचना सिद्धान्त को प्रस्तुत करते हुए उनका तुलनात्मक अध्ययन किया गया है साथ ही पाणिणीयोत्तर व्याकरणों की पद रचना को प्रस्तुत किया है। तृतीय अध्याय प्रमुख है जिसमें उत्तरपाणिनि व्याकरण सम्प्रदायों में पदार्थ विषयक चर्चा की गयी है, जिसमें प्रथम में विभिन्न दर्शनों में, तथा व्याकरण में पदार्थ विषयक विवेचन को प्रस्तुत करते हुए, पाणिनीयोत्तर व्याकरणसम्प्रदायों में पदार्थ विषयक चिन्तन तुलनात्मक रूप से प्रस्तुत किया है। चतुर्थ अध्याय में वृत्ति विषयक अध्ययन किया है, वृत्ति के स्वरूप का विस्तृत रूप से प्रस्तुतिकरण करने के साथ ही उसके प्रकारों का भी प्रस्तुतिकरण किया है। पाणिनि से उत्तरवर्ती व्याकरण परम्परा में वृत्ति विषयक विवेचन किया

है। पञ्चम अध्याय- प्रबन्ध के अन्तिम अध्याय में मुख्यतः पद एवं पदार्थ के विषय में पाणिनि व्याकरण तथा उत्तरपाणिनि व्याकरण सम्प्रदायों में तुलनात्मक चिन्तन किया गया है। उपसंहार- पद एवं पदार्थ विषय पर पाणिनीयोत्तर व्याकरण सम्प्रदाय का संस्कृतव्याकरण पर प्रभाव पर अधारित है। वस्तुतः पाणिनीयोत्तर व्याकरणों के द्वारा व्याकरणिक सिद्धान्तों का पाठकों को सरलता से अवबोध हो जाता है।

विषय सूची

1. उत्तरपाणिनि व्याकरणसम्प्रदायों में पद-परिभाषा एवं पद-विभाग 2. उत्तरपाणिनि व्याकरणसम्प्रदायों में तिङन्त और सुबन्त की दृष्टि से पदपदार्थ चिन्तन 3. उत्तरपाणिनि व्याकरणसम्प्रदायों में पदार्थ-सवरूप 4. उत्तरपाणिनि व्याकरणसम्प्रदायों में वृत्ति-विमर्श 5. उत्तरपाणिनि व्याकरण सम्प्रदायों में प्रस्तुत पदपदार्थ विज्ञान : एक तुलनात्मक विश्लेषण। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

28. शर्मा (प्रियंका)
कौण्डभट्ट एवं नागेशभट्ट द्वारा उपस्थापित मीमांसासम्मत भाषादर्शन (वैयाकरणभूषणसार एवं परमलघुमंजूषा के विशेष संदर्भ में)
निर्देशिका : डॉ. रेखा अरोड़ा
Th 24701

सारांश
(असत्यापित)

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में वस्तुतः वैयाकरणभूषणसार एवं परमलघुमंजूषा में मीमांसासम्मत भाषादर्शन सम्बन्धी प्रमुख सिद्धांतों का विश्लेषात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। वास्तव में वेदों से प्रारम्भ हुआ भारतीय भाषादर्शन का विकास अपने परमरूप में वैयाकरणदर्शन परम्परा में प्रकट हुआ। व्याकरणशास्त्र के साथ अन्यान्य शास्त्रों का घनिष्ठ सम्बन्ध है और यदि बात की जाये मीमांसाशास्त्र की तो वह स्वयं की विशिष्टताओं के कारण अत्यंत प्रसिद्ध है। यद्यपि मीमांसा का मुख्य प्रतिपाद्य विषय धर्म है तथापि उनके दार्शनिक सिद्धांतों के साथ-साथ मीमांसा परंपरा में भाषादर्शन पर अत्यंत सूक्ष्मता से विचार किया गया है। यही कारण है कि वैयाकरणों में भूषणकार कौण्डभट्ट एवं मंजूषाकार नागेशभट्ट ने अपने ग्रन्थों में मीमांसा मत को प्रमुखता से उपस्थापित किया है। शोध-प्रबन्ध के प्रथम अध्याय में दोनों आचार्य कौण्डभट्ट एवं नागेशभट्ट आदि के जन्म-स्थान, काल तथा उनकी रचनाओं का संक्षिप्त परिचय दिया है। भाषा दर्शन की परम्परा में प्रमुख मीमांसक भाष्यकार शबरस्वामी, वार्तिककार कुमारिलभट्ट एवं प्रभाकर के शब्द एवं वाक्यार्थ सम्बन्धी विचार प्रस्तुत किये गये हैं। द्वितीय अध्याय 'वैयाकरणभूषणसार में उपस्थापित मीमांसा पक्ष' में कौण्डभट्ट द्वारा धात्वर्थ, लकारार्थ, सुबर्थ, नामार्थ, समासशक्ति, शक्तिनिरूपण तथा स्फोटनिर्णयार्थ संदर्भ में

मीमांसा पक्ष को प्रमुख रूप प्रस्तुत किया गया है। तृतीय अध्याय 'परमलघुमंजूषा में उपस्थापित मीमांसा पक्ष' में नागेश के द्वारा शक्ति, लक्षणा, स्फोट, धात्वर्थ, लकारार्थ, नामार्थ एवं समासादिवृत्यर्थ संदर्भ में उपस्थापित मीमांसा पक्ष का उल्लेख करते हुये वैयाकरणों के सामान्य सिद्धांतों को प्रस्तुत किया गया है तथा अन्त में तुलनात्मक दृष्टि से अध्ययन कर नागेश की नवीन मान्यताओं का भी समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में 'मीमांसा एवं व्याकरण मतों का तुलनात्मक अध्ययन ऐतिहासिक संदर्भ में' किया गया है। जिनमें शब्दविचार, जातिशक्तिवाद एवं व्यक्ति शक्तिवाद, स्फोटवाद तथा वाक्यार्थवाद प्रमुख हैं। मीमांसकों में कुमारिल व प्रभाकर प्रमुख रूप से हैं तथा वैयाकरणों में भर्तृहरि एवं पतंजलि के मतों को मान्यता दी गई है।

विषय सूची

1. प्रस्तावना 2. वैयाकरणभूषणसार में उपस्थापित मीमांसा पक्ष 3. परमलघुमंजूषा में उपस्थापित मीमांसा पक्ष 4. मीमांसा ओर व्याकरण मतों का तुलनात्मक अध्ययन ऐतिहासिक सन्दर्भ में। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

29. शर्मा (बिपिन चन्द्र)
भास्कर-वेदान्त एवं रामनुज-वेदान्त का तुलनात्मक अध्ययन।
निर्देशिका : डॉ. पुनीता शर्मा
Th 24678

विषय सूची

1. भारतीय दर्शन-एक परिचय (भास्कराचार्य तथा रामानुजाचार्य : व्यक्तितव एवं कृत्तित्व के सन्दर्भ में) 2. भास्कर-वेदान्त के दार्शनिक सम्प्रतयय (भदाभेदवाद) 3. रामनुज-वेदान्त की दार्शनिक अवधारणएँ 4. भास्कर तााि रामानुज-वेदान्त की तुलनात्मक समीक्षा। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

30. शर्मा (महेश चन्द्र)
जैनेन्द्र व्याकरण और पाणिनीय व्याकरण का तुलनात्मक अध्ययन (समास, कारक एवं विभक्ति प्रकरण के संदर्भ में)
निर्देशिका : डॉ. अञ्जू सेठ
Th 24690

सारांश
(सत्यापित)

संस्कृत व्याकरण सम्बन्धि ग्रन्थों में समास, कारक एवं विभक्ति प्रकरण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तथा विस्तृत रुप से विवेचित है। शब्द-रचना में इन प्रकरणों का संस्कृत व्याकरण में महत्त्वपूर्ण

स्थान है। प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में जैनेन्द्र व्याकरण और पाणिनीय व्याकरण के समास, कारक एवं विभक्ति प्रकरण का तुल्नात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध का विभाजन चार अध्यायों में किया गया है। विषयप्रवेश में संस्कृत व्याकरण परम्परा के अन्तर्गत पाणिनि से पूर्ववर्ती तथा पर्वर्ती व्याकरण परम्परा की पृष्ठभूमि पर विचार करते हुए जैनेन्द्र व्याकरण के कर्ता देवनन्दि के व्यक्तित्व, कृत्तित्व आदि को प्रस्तुत किया गया है। प्रथम अध्याय जैनेन्द्र व्याकरण की संरचना पद्धति में प्रत्याहार, जैनेन्द्र अल्पापाक्षरी स्वतंत्र लाघव संज्ञाए, लौकिकभाषा का व्याकरण, सूत्र संरचना पद्धित पर विचार किया गया है। तत्पश्चात् सरलीकरण हेतु लाघव प्रक्रिया विषयक चिन्तन किया गया है। द्वितीय अध्याय समास निरुपण के अन्तर्गत जैनेन्द्र और पाणिनीय के समास प्रकरण का विस्तृत विश्लेषण तथा तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय कारक एवं विभक्तियोंं के विवेचन में जैनेन्द्र व्याकरण और पाणिनीय व्याकरण के कारक प्रकरण की संरचना, कारक विभाजन, कारक संज्ञाओ का तथा कारक विभक्तियो का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। पाणिनि कर्मप्रवचनीय संज्ञाओ का जैनेन्द्र व्याकरण में अभाव तथा देवनन्दि द्वारा स्वतन्त्र सूत्र रुप में उनके उल्लेख को प्रकट किया गया है तदनन्तर पाणिनि कर्मप्रवचनीय संज्ञाविधायक सूत्रों के स्थान पर तत् तत् स्वतन्त्र सूत्रों से उनमें विभक्ति विधान करने पर निष्कर्षो को प्रस्तुत किया गया है। अन्तिम चतुर्थअध्याय में समास, कारक एवं विभक्ति प्रकरणों में प्रयुक्त उदाहरणों के संदर्भ में जैनेन्द्र और पाणिनीय व्याकरण की परस्पर तुलना की गई है। इसमें विशेष रुप से पाणिनीय प्रकरण ग्रन्थ महाभाष्य एवं काशिका और जैनेन्द्र व्याकरण का प्रकरण ग्रन्थ (सम्प्रति उपलब्ध सबसे प्राचीन टीका) जैनेन्द्रमहावृत्ति के समास, कारक एवं विभक्ति प्रकरणों में प्रयुक्त उदाहरणों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

विषय सूची

1. जैनेन्द्रव्याकरण की संरचना पद्धति 2. जैनेन्द्रव्याकरण एवं पाणिनीय व्याकरण में समास निरूपण : एक तुलनात्मक दृष्टि 3. कारक एवं विभक्तियों का विवेचन 4. समास, कारक एवं विभक्ति प्रकरणों में प्रयुक्त उदाहरणों का तुलनात्मक अध्ययन। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

31. शर्मा (योगेश)
वाक्यपदीय के साधनसमुद्देश पर अम्बाकर्त्री टीका का समीक्षात्मक अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. श्रीवत्स
Th 24683

सारांश
(असत्यापित)

उक्त शीर्षक पर आधारित योगेश शर्मा द्वारा लिखितयह शोध प्रबन्ध कुल नौ अध्यायों में विभक्त है| प्रथम अध्यायमें भर्तृहरि तथा अम्बाकर्त्रीकार रघुनाथ शर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को रेखांकित करते हुए साधन समुद्देश तथा अम्बाकर्त्री टीका का सामान्य परिचय दिया गया है| द्वितीय अध्याय में साधन विषय पर विस्तार से चर्चा की गयी है , विशेषतः साधन, शक्ति, वक्ता का स्वातन्त्र्य, करण आदि की कारकता, कर्ता, हेतु, साधन-संख्या-विमर्श तथा शब्दब्रह्म की कालरूपता आदि विषय प्रतिपादित किये गए हैं| तृतीय अध्याय कर्म पर केन्द्रित है| इसके अन्तर्गत कर्म के सात भेदों का सोदाहरण प्रतिपादन किया गया है तथा उनके प्रतिपादन में प्रसंगवश व्याकरण के प्रक्रिया पक्ष के आधार पर दार्शनिक विश्लेषण किया गया है| चतुर्थ अध्याय में करण का प्रतिपादन है| इसके अन्तर्गत करण के स्वरूप, कर्ता के साथ उसकी तुलना तथा अन्य दार्शनिक पक्ष उद्घाटित हुए हैं| पञ्चम अध्याय में कर्ता एवं हेतु पर विचार हुआ है| इसके अन्तर्गत कर्तृ-स्वातन्त्र्य के छः हेतु, कर्ता की विवक्षाधीनता आदि विषयों के साथ व्याकरण प्रक्रिया पक्ष तथा दार्शनिक पक्ष उन्मीलित हुआ है| षष्ठ अध्याय सम्प्रदान पर आधारित है| इसके अन्तर्गत सम्प्रदान के तीन हेतु, बाध्यबाधकभाव दृष्टि से सम्प्रदान की प्रवृत्ति तथा भेदाभेदविवक्षा आदि दार्शनिक पक्ष उद्घाटित हुए हैं| सप्तम अध्याय में अपादान पर विचार हुआ है| इसके अन्तर्गत अपादान के तीन प्रकार, प्रसंगवश कुछ पारिभाषिक शब्द और उनका दार्शनिक विवेचन तथा अपादान के अन्य सूत्रों की सार्थकता का प्रतिपादन हुआ है| अष्टम अध्याय में अधिकरण की चर्चा की गयी है| त्रिविध अधिकरण, अधिकरण के प्रथम आधार के रूप में आकाश का प्रतिपादन तथा भर्तृहरि के अभेदोपनिबन्धन भेद जैसे विषयों पर विचार किया गया है| इसी प्रकार शोधप्रबन्ध के अन्तिम व नवम अध्याय में शेष तथा संबोधन विषयों पर चर्चा की गयी है| अन्त में निष्कर्ष के रूप में उपसंहार दिया गया है|

विषय सूची

1. भर्तृहरि तथा रघुनाथ शर्मा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व 2. साधन-समुद्देश में साधन-विमर्श 3. कर्म साधन 4. कारण साधन 5. कर्ता साधन एवं हेतु विचार 6. सम्प्रदान साधन 7. अपादान साधन 8. अधिकरण साधन 9. शेष तथा सम्बोधन। उपसंहार। कतिपय पारिभाषिक शब्द। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

32. शर्मा (विकास)
भर्तृहरिकृतवाकयपदीय में मीमांसादर्शन का प्रतिपादन (हेलाराजीयटीका के परिप्रेक्ष्य में)।
निर्देशिका : डॉ. अञ्जू सेठ
Th 24679

सारांश
(सत्यापित)

वाक्यपदीय संस्कृत व्याकरणदर्शन का अप्रतिम दार्शनिक ग्रन्थ है। यह ऐसा रत्नाकर ग्रन्थ है, जिसके अन्तर्गत विभिन्न दार्शनिक विषय, दर्शन एवं सम्प्रदाय रूपी रत्नों का समावेश है। महर्षि पतंजलि ने पाणिनीय व्याकरण शास्त्र को शब्दशास्त्र के धरातल से ऊपर उठकर दर्शनशास्त्र के उच्च पद पर विराजमान करने का कार्य अपने ग्रन्थ महाभाष्य में किया। उन्हीं विचार बीजों का पल्लवन, परिवर्धन एवं सम्वर्धन भर्तृहरिकृत वाक्यपदीय ग्रन्थ में हुआ है। अतः व्याकरण के दार्शनिक बीजों का विकसित रूप वाक्यपदीय है, जिसके अन्तर्गत संग्रह तथा महाभाष्य के सिद्धान्तों का विस्तृत वर्णन है। इन्हीं सिद्धान्तों को वाक्यपदीय टीकाकार हेलाराज ने 'प्रकीर्ण प्रकाश' टीका में यथोचित विश्लेषण कर अपनी दार्शनिक बुद्धि का परिचय दिया है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि हेलाराज न केवल वैयाकरण अपितु सांख्य-योग, न्याय-वैशेषिक, मीमांसा-अद्वैत आदि दर्शन की सभी दार्शनिक शाखाओं में निष्णात थे। वाक्यपदीय एवं हेलाराजीयटीका के अन्तर्गत मीमांसादर्शन विषयक चिन्तन प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दृष्टि से विभिन्न दार्शनिक विषयों की विवेचना में उपलब्ध होता है। इस विवेचना से वाक्यपदीय की विविधता एवं विशिष्टता स्पष्टतः परिलक्षित होती है। प्रस्तुत ग्रन्थ में त्रिमुनि व्याकरण एवं मीमांसासम्मत भाषादर्शन, वाक्यपदीय में मीमांसादर्शन का प्रतिपादन यथा शब्द के एकत्व व नानात्व के विषय में, वाक्य विवेचना व पदविश्लेषण के अन्तर्गत, हेलाराजीय टीका में उपलब्ध विभिन्न दार्शनिक सम्प्रदाय, मीमांसादर्शन के कर्मकाण्डात्मक भाग याग का हेलाराज द्वारा विश्लेषण तथा हेलाराज की टीका में वर्णित मीमांसा के याग सम्बन्धी सन्दर्भ, मीमांसा का वाक्यार्थवाद, जातिपदार्थवाद, मीमांसा की तत्त्वमीमांसा, धात्वर्थवाद व उत्तरवर्ती मीमांसकों द्वारा भर्तृहरि दर्शन की समालोचना अध्ययन के मुख्य विषय रहे। भर्तृहरिकृतवाक्यपदीय में मीमांसादर्शन का प्रतिपादन (हेलाराजीयटीका के परिप्रेक्ष्य में) यह शोध-ग्रन्थ व्याकरण दर्शन के अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

विषय सूची

1. त्रिमुनि व्याकरण एवं मीमांसा सम्मत भाषादर्शन 2. वाक्यपदीय में मीमांसा विषयक चिन्तन 3. हेलाराज की टीका में विभिन्न दार्शनिक समप्रदाय 4. हेलाराज की टीका में उपलब्ध मीमांसा के याग सम्बन्धी सन्दर्भ 5. हेलाराज की टीका में उपलब्ध मीमांसा दर्शन 6. उत्तरवर्ती मीमांसा दर्शन में भर्तृहरि दर्शन की समालोचना। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

33. शर्मा (श्याम सुन्दर)
व्युत्पत्तिवाददिशा द्वितीयाविभक्त्यर्थनिर्णयः।
निर्देशक : डॉ. ओमनाथ बिमली
Th 24694

सारांश
(असत्यापित)

शोधप्रबन्धेऽस्मिन् अष्टौ अध्यायाः सन्ति। अत्र प्रमुखरूपेण द्वितीयाविभक्तिसमभिव्याहृतवाक्येषु कथं शाब्दबोधो जायत इति समीक्षीतम्। अथ च द्वितीयाविभक्तिसंबद्धानि पाणिनिसूत्राण्यपि व्याकरणशास्त्रदिशा न्यायशास्त्रदिशा च व्याख्यातानि। तथा हि - आदौ न्यायशास्त्रस्य कारकचिन्तनम्, गदाधरभट्टाचार्यस्य जन्मस्थलं विद्यार्जनञ्च, गदाधरभट्टाचार्यस्य कालः, गदाधरभट्टाचार्यस्य वंशवृक्षः, गदाधरभट्टाचार्यस्य कृतयः, व्युत्पत्ति-वादस्य विषयवस्तु, 'व्युत्पत्तिवाद'शब्दस्य व्युत्पत्तिः, व्युत्पत्तिवादस्य व्याख्यानग्रन्थेषु संस्कृत-हिन्दी-आङ्ग्लव्याख्यानग्रान्थाः, व्युत्पत्तिवादस्य सिद्धान्ताः प्रस्तुताः। ततः शाब्दबोधकारणानि, पदज्ञानम्, पदार्थज्ञानम्, शाब्दबोधः, पदार्थोपस्थितौ सहकारिकारणानि (वृत्तिः, वृत्तिभेदाः, शक्तिः, शक्तिविषये प्राच्यनव्यमतभेदः, शक्तिभेदाः, लक्षणा, लक्षणा भेदाः), शाब्दबोधे सहकारिकारणानि (आसत्तिः, योग्यता, आकाङ्क्षा, तातर्पर्यज्ञानम्) शक्तिग्रहसाधनानि (व्याकरणम्, उपमानम्, कोशः, आप्तवाक्यम्, व्यवहारः, वाक्यशेषः, विवृतिः, सिद्धपदसानिध्यम्) प्रस्तुतानि। ततः जयन्तभट्टादिप्राच्यनैयायिकानां गदाधरभट्टादिनव्यनैयायिकानां कौण्डभट्टादिप्राच्यवैयाकरणानां नागेशभट्टादिनव्यवैयाकरणानाञ्च सिद्धान्तालोके धात्वर्थो, विभक्त्यर्थो, धात्वर्थविभक्त्यर्थयोस्सम्बन्धः, आख्यातार्थः, व्यापारमुख्यविशेष्यकफलमुख्य-विशेष्यकप्रथमान्तार्थमुख्यविशेष्यकशाब्दबोधादिविषयान् परीक्ष्य 'चैत्रः ग्रामं गच्छति' इति कर्त्राख्याते, 'चैत्रेण ग्रामो गम्यते' इति कर्माख्याते, 'चैत्रेण सुप्यते' इति भावाख्याते च पदपदार्थपदार्थान्वयो विवेचितः। ततः धातुकर्मप्रत्यययोस्सामान्यार्थविवेचनम्, कर्मप्रत्ययविशिष्टार्थविवेचनम्, सकर्मकधातुसमभि- व्याहृतकर्मप्रत्ययार्थविवेचनम्, ज्ञानार्थकधातुसमभिव्याहृतकर्मप्रत्ययार्थविवेचनम्, इच्छार्थकधातुसमभि-व्याहृतकर्मप्रत्ययार्थविवेचनम्, कृत्यर्थकधातुसमभिव्याहृतकर्मप्रत्ययार्थविवेचनम्, उपपदद्वितीया-विभक्त्यर्थविवेचनं कृतमस्ति।

विषय सूची

1. न्यायपरम्पराया : गदाधरभट्टाचार्यस्य व्यत्पत्तिवादस्य च परिचयः शाब्दबोधस्वरूपञ्च 2. धातुकर्मप्रत्यययास्सामान्यार्थविवेचनम् 3. कर्मप्रत्ययविशिष्टार्थविवेचनम् 4. सकर्मकधातुसमभिव्याहृतकर्मप्रत्ययार्थविवेचनम् 5. ज्ञानार्थकधातुसमभिव्याहृतकर्मप्रययार्थविवेचनम 6. इच्छार्थकधातुसमभिव्याहृतकर्मप्रययार्थविवेचनम 7. कृत्यर्थकधातुसमभिव्याहृतकर्मप्रययार्थविवेचनम 8. उपपदद्वितीयाविभक्त्यर्थविवेचनम्। शोधप्रबन्धस्योपसंहारः। सन्दर्भसहायकग्रंथावलिः।

34. सत्यवली (रवीन्द्र)
सुपद्मव्याकरण और पाणिनीय व्याकरण में नामपद एवं क्रियापद : एक तुलनात्मक विश्लेषण।
निर्देशक : डॉ. ए. सुधा देवी
Th 24692

सारांश
(असत्यापित)

पाणिनि के उत्तरवर्ती काल में अनेक व्याकरण सम्प्रदाय प्रचलित हुए। इन उत्तरवर्ती व्याकरण सम्प्रदायों का प्रमुख उद्देश्य अष्टाध्यायी की क्लिष्टता तथा जटिलता को दूर करना था उत्तरवर्ती व्याकरण सम्प्रदायों में पद्मनाभदत्त विरचित सुपद्मव्याकरण का स्थान महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में सर्वप्रथम सुपद्मव्याकरण एवं पाणिनीय व्याकरण के नामपदों एवं क्रियापदों के पद रचना सम्बन्धी सिद्धान्तों का अध्ययन किया गया है तदनन्तर सुप्द्मव्याकरण एवं पाणिनि व्याकरण का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस शोध प्रबन्ध का विभाजन चार अध्यायों में किया गया है, सर्वप्रथम भूमिका भाग में पाणिनि पूर्ववर्ती वैयाकरण तथा पाणिनि उत्तरवर्ती वैयाकरणों के साथ पाणिनीय परम्परा का सामान्य परिचय देते हुए आचार्य पद्मनाभदत्त के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर प्रकाश डालते हुए उनका अन्य वैयाकरणों में स्थान भी निर्धारित करने प्रयास किया गया है । प्रथम अध्याय में सुपद्मव्याकरण की संरचना पद्धति को आधार बनाया गया है जिसके अन्तर्गत प्रत्याहार सूत्र, पारिभाषिक संज्ञाओं, प्रक्रिया पद्धति, सूत्र संरचना पद्धति तथा सूत्र व्याख्यान पद्धति का विवेचन प्रमुखता से किया गया है। द्वितीय अध्याय में सुपद्मव्याकरण एवं अष्टाध्यायी के नाम पद विषयक विवेचन किया है जिसके अन्तर्गत अजन्त एवं हलन्त विषयक विवेचन करने के साथ ही साथ सर्वनाम तथा अव्यय विषयक विवेचन भी प्रस्तुत किया गया है। तृतीय अध्याय में सुपद्मव्याकरण एवं अष्टाध्यायी के क्रियापद के अन्तर्गत क्रियापद प्रत्ययों का वर्गीकरण, धातुसंज्ञा, परस्मैपद एवं आत्मनेपद तथा लकार सम्बन्धी प्रत्ययों को प्रस्तुत किया है। चतुर्थ अध्याय में सूक्ष्म रूप में व्याकरण परम्परा के प्रमुख आचार्यों के पद सम्बन्धी विशेष विचारों के साथ सुपद्मव्याकरण के नाम पद एवं क्रियापद सम्बन्धी विशेष तथ्यों की चर्चा की गयी है, तत्पश्चात् उपसंहार में सम्पूर्ण शोधप्रबन्ध में उजागर तथ्यों को विश्लेषित करते हुए सुपद्मव्याकरण तथा पाणिनि व्याकरण के सिद्धान्तों को निष्कर्ष के रूप में प्रस्तुत किया गया है। निष्कर्ष रूप में सुपद्मव्याकरण ने पाणिनीय व्याकरण को सरलता तथा संक्षिप्तता प्रदान करने का कार्य किया है।

विषय सूची

1. सुपद्मव्याकरण की संरचना पद्धति 2. सुपद्मव्याकरण एवं अष्टाध्याायी में नामपद (सुबन्त) 3. सुपद्मव्याकरण एवं अष्टाध्यायी में क्रियापद (तिङन्त) 4. भारतीय व्याकरण परमपरा के आलोक में सुपद्मव्याकरण का चिन्तन वैशिष्ट्य : नामपद एवं क्रियापद के परिप्रेक्ष्य में। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

35. सोहन कुमार

वैयाकरणभूषणसार में शक्ति तथा नामार्थ निर्णय (काशिका, शाङ्करी तथा प्रभा टीकाआकें के सन्दर्भ में)।

निर्देशिका : डॉ. सन्ध्या राठौर

Th 24705

सारांश

(असत्यापित)

शोध-प्रबन्ध का संक्षिप्त सार आचार्य कौण्डभट्ट का वैयाकरणभूषसार व्याकरणदर्शन के सिद्धांतों को सार रूप में प्रतिपादित करने वाला महनीय ग्रंथ है। जिसमें 14 निर्णयों में व्याकरणदर्शन सम्बन्धी विविध विषयों का प्रतिपादन किया गया है। उन निर्णयों में शक्ति तथा नामार्थ निर्णय प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध के आधार हैं। प्रस्तुत शोधप्रबन्ध का विषय है - व्यैकरणभूषणसार में शक्ति तथा नामार्थ निर्णय (काशिका, शाङ्करी तथा प्रभा टीकाओं के सन्दर्भ में)। इस शोधविषय के उद्देश्य हैं:1- शक्ति के स्वरूप तथा महत्त्व का विवेचन।2- नैयायिक, मीमांसक तथा वैयाकरणसम्मत शक्ति तथा नामार्थविषयक विचारों की समीक्षा करना।3- शक्ति तथा नामार्थ के विषय में कौण्डभट्ट तथा टीकाकारों के मतों का विवेचन।4- नामार्थ के विविध अर्थों का विश्लेषण।5- नामार्थ के सम्बन्ध में पतञ्जलि के मतों का विवेचन।6- प्रातिपदिक के अर्थ के सम्बन्ध में मीमांसकों के मत का विश्लेषण।इस सम्पूर्ण शोध-प्रबन्ध को छः अध्यायों में विभत्तफ़ किया गया है। जिनमें से प्रथम अध्याय के अंतर्गत व्याकरण दर्शन का स्वरूप, प्रतिपाद्य एवं परंपरा को स्पष्ट किया गया है इसी अध्याय में भट्टोजिदीक्षित तथा कौण्डभट्ट के व्यत्तिफ़त्व, कृतित्व के साथ ही वैयाकरणभूषणसार व उसकी टीकाओं का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में पद के साथ पदार्थ के सम्बन्धरूप शक्ति का प्रतिपादन किया गया है। तृतीय अध्याय में शब्द की साधुता-असाधुता तथा उन साधु-असाधु शब्दों में शत्तिफ़ का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय का प्रतिपाद्य विषय नामार्थ-जाति तथा व्यत्ति है। मीमांसक जातिशक्तिवाद के समर्थक हैं तो नैयायिक व्यक्तिशक्तिवाद के। वैयाकरण दोनों मतों का समन्वय कर एक विशिष्ट मत की स्थापना करते हैं। पञ्चम अध्याय में नामार्थ- लिङ्ग, संख्या तथा कारक का विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में शब्द का अपना स्वरूप भी नामार्थ-इस विषय का प्रतिपादन किया गया है।

वैयाकरणों का मत है कि जात्यादि पाँच नामार्थों सहित शब्द का अपना स्वरूप भी नाम का ही अर्थ है।

विषय सूची

1. व्याकरण दर्शन परम्परा एवं वैयाकरणभूषणसार 2. शक्ति का स्वरूप 3. असाधु शब्द और वाचकता 4. नामार्थ - जाति और व्यक्ति 5. नामार्थ - लिङ्ग, संख्या और कारक 6. नामार्थ - शब्द। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

36. सिंह (कुलदीप)
पूर्णप्रज्ञभाष्य एवं श्रीकरभाष्य का तुलनात्मक अध्ययन (तत्त्व-मीमांसा के सन्दर्भ में)।
निर्देशिका : डॉ. दीपक कालिया
Th 24681

सारांश
(सत्यापित)

ब्रह्मसूत्र पर मध्व का पूर्णप्रज्ञभाष्य एवं श्रीपति का श्रीकरभाष्य, मुमुक्षुओं एवं दार्शनिकों के लिए अद्वैतवाद से नितान्त विलक्षण एवं नवीन विचारधारा के परिचायक हैं। मध्व के अनुसार, अनन्त गुणों से परिपूर्ण निर्दुष्ट विष्णु ब्रह्म पद का वाच्य है तो श्रीपति शक्तिविशिष्ट लिंगात्मक शिव को ब्रह्म पद से अभिहित करते हैं। विष्णु एवं शिव दोनों ही नित्य एवं स्वतन्त्र हैं, सत्-चित्-आनन्द एवं निर्गुण-सगुणरूप हैं। श्रीपति ब्रह्म को मध्व के समान केवल निमित्तकारण ही नहीं मानते अपितु उसे उपादानकारण से अभिन्न भी मानते हैं। अतः उपादानत्व से सर्वथा रहित मध्वसम्मत ब्रह्म जगत् का निमित्तकारण तथा श्रीपतिसम्मत ब्रह्म जगत् का अभिन्ननिमित्तोपादानकारण कहलाता है। मध्व एवं श्रीपति की दृष्टि में जीव सकाम, सदोष, दुःखपूर्ण, अल्पज्ञ, अजड़, बद्ध, अणु, नित्य, पराधीन और अनेक है। श्रीपति उसे ब्रह्म का अंश मानते हैं, परन्तु मध्व के अनुसार वह अंश होने पर भी ब्रह्म का प्रतिबिम्बांश है, न कि स्वांश। मध्व की दृष्टि में जीव अस्वतन्त्रकर्तृत्व से युक्त है, जबकि श्रीपति के अनुसार वह किंचित्कर्तृत्व से युक्त है। मध्वमत में समस्त जागतिक जड़पदार्थों का परित्याग कर चिन्मात्र देह से आनन्द के भोक्ता जीव की ब्रह्म से भिन्न जो अवस्थिति है, वह उसकी मुक्तावस्था कहलाती है परन्तु श्रीपतिमत में नदीसमुद्रवत् मलत्रय की निवृत्तिपूर्वक स्वाभाविक रूप से ब्रह्मत्वप्राप्ति हो जाने पर जीव मुक्त कहा जाता है। पूर्णप्रज्ञ एवं श्रीकर दोनों भाष्यों के अनुसार जगत् अस्वतन्त्र एवं सत्य है। पूर्णप्रज्ञभाष्य में, ब्रह्म, प्रकृति, महत्, बुद्धितत्त्व, अहंकार, मनस्, पंचज्ञानेन्द्रिय, पंचकर्मेन्द्रिय, पंचतन्मात्र एवं पंचस्थूलभूत को मिलाकर जगत्सृष्टि के कुल छब्बीस तत्त्वों का उल्लेख है, परन्तु श्रीकरभाष्य में इन छब्बीस

तत्त्वों के अतिरिक्त सदाशिव, ईश्वर, शुद्धविद्या, माया, काल, नियति, विद्या, कला, राग एवं पुरुष ये दस तत्त्व और हैं और इस प्रकार तत्त्वों की कुल संख्या छत्तीस है।

विषय सूची

1. ब्रह्म 2. जीव 3. जगत् 4. ब्रह्म एवं जीव का सम्बन्ध 5. पूर्णप्रज्ञभाष्य एवं श्रीकरभाष्य के साम्य-वैषम्य की समालोचना। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

37. सिंह (मधुबाला)
न्यायसिद्धान्तमुक्तावली पर पञ्चाननशास्त्रिकृत मुक्तावलीसङ्ग्रह का समीक्षात्मक अध्ययन (शब्दखण्ड के परिप्रेक्ष्य में)
निर्देशिका : डॉ. अञ्जू सेठ
Th 24672

सारांश
(सत्यापित)

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली पर पञ्चाननशास्त्रिकृत मुक्तावलीसङ्ग्रह का समीक्षात्मक अध्ययन (शब्दखण्ड के परिप्रेक्ष्य में) न्याय दर्शन परंपरा में 10 वीं शताब्दी के बाद एक नूतन प्रणाली का उदय हुआ जो नव्यन्याय के नाम से प्रसिद्ध है। तत्त्वचिन्तामणि के रचनाकार गंगेश उपाध्याय नव्यन्याय के प्रवर्तक हैं। न्याय की शैली इतनी क्लिष्ट थी कि न्यायदर्शन का ज्ञान प्राप्त करना जन सामान्य के अत्यंत क्लिष्ट कार्य बन गया था। इस शैली को सरलता प्रदान करने में अनेक विद्वानों के साथ विश्वनाथ पञ्चानन भट्टाचार्य का योगदान अक्षुण्ण है। विश्वनाथ की न्यायसिद्धान्तमुक्तावली पर पञ्चानन शास्त्री द्वारा लिखी टीका 'मुक्तावलीसंग्रह' एक अद्वितीय कार्य है। यह टीका अपने शास्त्र के पदार्थों तथा अन्य शास्त्रों के पदार्थों का बोध कराने में अत्यंत उपयोगी है। न्याय वैशेषिक के दार्शनिक तत्त्वों को गहनता से समझने में इस ग्रंथ का अध्ययन अत्यंत उपकारक है क्योंकि पञ्चानन शास्त्री ने दूसरे दार्शनिकों द्वारा उपस्थापित किए गए प्रश्नों के परिप्रेक्ष्य में अपने मत का सुंदर परिष्करण किया है। न्यायसिद्धान्तमुक्तावली की पंक्तियों के अभिप्राय के स्पष्टीकरण में पञ्चाननशास्त्रिकृत 'मुक्तावलीसंग्रह' का अत्यंत योगदान है प्रस्तुत शोध प्रबन्ध 5 अध्यायों तथा उपसंहार में विभक्त है जिसके प्रथम अध्याय में न्याय वैशेषिक परंपरा तथा ग्रन्थकार का परिचय विवेचित है तथा टीकाकार पञ्चानन शास्त्री का जीवन परिचय व्यक्तित्व, कर्तृत्व भी प्रथम बार प्रकाश में लाया गया है। द्वितीय अध्याय में शाब्दबोध का स्वरूप तथा शक्तिग्रहोपाय का वर्णन किया है। तृतीय अध्याय में लक्षणावृत्ति का स्वरूप साहित्यशास्त्र एवं न्यायमत में प्रदर्शित कर इसके भेदों पर प्रकाश डाला है। चतुर्थ अध्याय में पद एवं इसका

स्वरूप वर्णित है। पंचम अध्याय में शाब्दबोध के सहकारी कारण के रूप में आसक्ति, योग्यता, आकांक्षा तथा तात्पर्य का ज्ञान समीक्षित है। इस प्रकार मीमांसाकों एवं वैयाकरणों की भाषा सम्बन्धी अवधारणाओं पर न्यायदर्शन की जो प्रतिक्रिया है उन प्रतिक्रियाओं को तर्कतः और तत्त्वतः समझने का प्रयास शोधकर्त्री द्वारा इस शोधप्रबन्ध में किया गया है

विषय सूची

1. न्यायवैशेषिक परम्परा तथा ग्रन्थकार-परिचय 2. शाब्दबोध का स्वरूप तथा शक्तिग्रहोपाय 3.लक्षणावृत्ति 4. पद तथा पद के भेद 5. शाब्दबोध के सहकारी कारण। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

M.Phil Dissertations

38. UPRETI (Bhaskar)
Computational Analysis and Development of Web based System for Paninian Derivational Process of Sanskrit Words Ending with Feminine Suffixes.
Supervisor: Dr. Subhash Chandra

39.. तिवारी (गणेश)
कविबप्पभट्टि-कृत तारायणो का सयुक्तिक संस्कृतच्छायाकरण।
निर्देशक : डॉ. बलराम शुक्ल

40. तेज प्रकाश
वाग्-विभाजन का तुलनात्मक अध्ययन (भर्तृहरिकृत वाक्यपदीय एवं सोमानन्दकृत शिवदृष्टि के परिप्रेक्ष्य में)।
निर्देशिका : डॉ. अनीता शर्मा

41.. प्रेमचन्द
कठोपनिषद् में प्रत्यय-विमर्श।
निर्देशिका : डॉ. करुणा आर्या

42. भावना
महर्षिकुलवैभवम् में ऋषितत्त्व-विवेचन।
निर्देशक : डॉ. रणजित बेहेरा

43.. शशि
आन्ध्रसातवाहनकालीन अभिलेखों का सांस्कृतिक अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. पूर्णिमा कौल

44. शाक्य (संजय)
विनियोग विधि में षट्-प्रमाण (अर्थसंग्रह की टीकाओं के आलोक में)।
निर्देशक : डॉ. सत्यपाल सिंह

45. सरकार (मिठुन)
अथर्वा ऋषि दृष्ट व्रात्य सूक्त : एक विवेचन।
निर्देशक : डॉ. धर्मेन्द कुमार

46. सिंह (विद्या प्रकाश)
न्याय परम्परा में छल पदार्थ।
निर्देशक : डॉ. दीपक कालिया

47. सोनिया
भर्तृहरि-कृत-शतकत्रयम् में धर्मशास्त्रीय तत्त्व : एक अनुशीलन।
निर्देशक : डॉ. वेद प्रकाश डिंडोरियो